

آيَاتُهَا ۱۱۱ ﴿۱۷﴾ سُورَةُ بَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿۱۲﴾ زُكُوعَاتُهَا ۱۲							
12 रकुआत				(17) सूरह बनी इस्राईल औलादे याकूब (अ)		आयात 111	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
سُبْحَنَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ							
पाक	वह जो	ले गया	अपने बन्दे को	रातों रात	से	मस्जिद	
الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنَ							
हराम	तक	मस्जिदे अक़सा	जिस को	बरकत दी हम ने	उस के इर्द गिर्द	ताकि दिखा दें हम उसको	से
أَيُّنَا إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿١﴾ وَآتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ							
अपनी निशानियां	वेशक वह	वह	सुनने वाला	देखने वाला	1	और हम ने दी	मूसा
وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ إِلَّا تَتَّخِذُوا مِنْ دُونِي وَكِيلًا ﴿٢﴾							
और हम ने बनाया उसे	हिदायत	बनी इस्राईल के लिए	कि न ठहराओ तुम	मेरे सिवा	कारसाज़	2	
ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ﴿٣﴾							
औलाद	जो - जिस	हम ने सवार किया	नूह (अ) के साथ	वेशक वह	था	बन्दा	शुक्र गुज़ार
وَقَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ فِي الْكِتَابِ لُتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ							
साफ़ कह दिया हम ने	तरफ - को	बनी इस्राईल	किताब	अलबत्ता तुम फ़साद करोगे ज़रूर	में	ज़मीन	
مَرَّتَيْنِ وَلْتَعْلَنَ غُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٤﴾ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَهُمَا بِعَثْنَا							
दो मरतबा	और तुम ज़रूर ज़ोर पकड़ोगे	बड़ा ज़ोर	4	पस जब	आया	वादा	दो में से पहला
عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَا أُولَىٰ بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الدِّيَارِ							
तुम पर	अपने बन्दे	लड़ाई वाले	सख़्त	तो वह घुस पड़े	शहरों के अन्दर		
وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ﴿٥﴾ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ							
और था	एक वादा	पूरा होने वाला	5	फिर	हम ने फेर दी	तुम्हारे लिए	बारी
وَأَمَدَدْنَكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ﴿٦﴾							
और हम ने तुम्हें मदद दी	मालों से	और बेटे	और हम ने तुम्हें कर दिया	ज़ियादा	जत्था (लशकर)	6	
إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا							
अगर	तुम ने भलाई की	तुम ने भलाई की	तुम ने भलाई की	अपनी जानों के लिए	और अगर	तुम ने बुराई की	तो उन के लिए
فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا							
फिर जब	आया	दूसरा वादा	कि वह बिगाड़ दें	तुम्हारे चहरे	और वह घुस जाएं		
الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا ﴿٧﴾							
मस्जिद	जैसे	वह घुसे उस में	पहली बार	और बरबाद कर डालें	जहां ग़ल्बा पाएं वह	पूरी तरह बरबाद	7

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है पाक है वह, जो अपने बन्दे को रातों रात ले गया मस्जिदे हराम (खाना क़अबा से) मस्जिदे अक़सा (बैतुल मुक़द़स) तक जिस के इर्द गिर्द (अतराफ़) को हम ने बरकत दी है, ताकि हम उसे अपनी निशानियां दिखा दें, वेशक वह सुनने वाला देखने वाला है। (1)

और हम ने मूसा (अ) को किताब दी, और उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया कि तुम मेरे सिवा (किसी को) कारसाज़ न ठहराओ। (2)

ऐ (उन लोगों कि) औलाद! जिन को हम ने नूह (अ) के साथ सवार किया, वेशक वह शुक्रगुज़ार बन्दा था। (3)

और हम ने बनी इस्राईल को किताब में साफ़ कह सुनाया, अलबत्ता तुम फ़साद करोगे ज़मीन में दो मरतबा और तुम ज़रूर ज़ोर पकड़ोगे (सरकशी करोगे)। (4)

पस जब दोनों में से पहले वादे (का वक़्त) आया तो हम ने तुम पर अपने सख़्त लड़ाई वाले बन्दे भेजे, वह शहरों के अन्दर घुस गए (फैल गए), और यह एक वादा था पूरा हो कर रहने वाला। (5)

फिर हम ने उन पर तुम्हारी बारी फेर दी (तुम्हें ग़ल्बा दिया) और मालों से और बेटों से हम ने तुम्हें मदद दी और हम ने तुम्हें बड़ा जत्था (लशकर) कर दिया। (6)

अगर तुम ने भलाई की तो अपनी जानों के लिए, और अगर तुम ने बुराई की तो उन (अपनी जानों) के लिए, फिर (याद करो) जब दूसरे वादे (का वक़्त) आया कि वह (दुश्मन) तुम्हारे चहरे बिगाड़ दें, और वह मस्जिदे (अक़सा) में घुस जाएं जैसे वह पहली बार घुसे थे, और यह कि जहां ग़ल्बा पाएं, पूरी तरह बरबाद कर डालें। (7)

उम्मीद है (बईद नहीं) कि तुम्हारा रब तुम पर रहम करे और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम (भी) वही करेंगे और हम ने जहननम काफ़िरों के लिए कैद खाना बनाया है। (8) वेशक यह कुरआन उस राह की रहनुमाई करता है जो सब से सीधी है। और उन मोमिनों को बशारत देता है जो अच्छे अमल करते हैं कि उन के लिए बड़ा अजर है। (9) और यह कि जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं लाते, हम ने उन के लिए तैयार किया है अज़ाब दर्दनाक। (10) और इन्सान बुराई की दुआ करता है, जैसे वह भलाई की दुआ करता है, और इन्सान जल्द बाज़ है। (11) और हम ने रात और दिन को दो निशानियां बनाया, फिर हम ने रात की निशानी को मिटा दिया (मान्द कर दिया) और हम ने दिन की निशानी को दिखाने वाली बनाया ताकि तुम अपने रब का फ़ज़ल (रोज़ी) तलाश करो, और ताकि बरसों की गिनती और हिसाब मालूम करो और हर चीज़ को हम ने उसे तफ़्सील के साथ बयान कर दिया है। (12) और हम ने हर इन्सान की किस्मत उस की गर्दन में लटका दी, और हम उस के लिए निकालेंगे रोज़े कियामत एक किताब, वह उसे खुला हुआ पाएगा। (13) अपना नामा-ए-आमाल पढ़ ले, आज तू खुद अपने ऊपर काफ़ी है हिसाब लेने वाला (मोहतसिब)। (14) जिस ने हिदायत पाई उस ने सिर्फ़ अपने लिए हिदायत पाई, और जो कोई गुमराह हुआ तो वह गुमराह हुआ सिर्फ़ अपने बुरे को, और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता, और जब तक हम कोई रसूल न भेजें हम अज़ाब देने वाले नहीं। (15) और जब हम ने किसी बस्ती को हलाक करना चाहा तो हम ने उस के खुश हाल लोगों को हुक्म भेजा तो उन्होंने ने उस में नाफ़रमानी की फिर उन पर पूरी हो गई बात (हुक्म साबित हो गया) फिर हम ने उन्हें बुरी तरह हलाक कर दिया। (16) और हम ने नूह (अ) के बाद कितनी ही बस्तियां हलाक कर दीं और तेरा रब काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों की खबर रखने वाला देखने वाला। (17)

عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يَرْحَمَكُمۥٓ ۖ وَإِنْ عُدتُّمْ عُدْنَا ۚ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ							
उम्मीद है	तुम्हारा रब	कि	वह तुम पर रहम करे	और अगर	तुम फिर (वही) करोगे	हम वही करेंगे	और हम ने बनाया
لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ﴿٨﴾ إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ							
काफ़िरों के लिए	कैद खाना	8	वेशक	यह कुरआन	रहनुमाई करता है	उस के लिए जो	वह सब से सीधी
وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ﴿٩﴾							
और बशारत देता है	मोमिन (जमा)	वह लोग जो	अमल करते हैं	अच्छे	कि	उन के लिए	बड़ा अजर
وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٠﴾							
और यह कि	जो लोग	ईमान नहीं लाते	आखिरत पर	हम ने तैयार किया	उन के लिए	अज़ाब	दर्दनाक
وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ﴿١١﴾							
और दुआ करता है	इन्सान	बुराई की	उस की दुआ	भलाई की	और है	इन्सान	जल्द बाज़
وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ							
और हम ने बनाया	रात	और दिन	दो निशानियां	फिर हम ने मिटा दिया	रात की निशानी	और हम ने बनाया	दिन की निशानी
مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ							
दिखाने वाली	ताकि तुम तलाश करो	फ़ज़ल	अपने रब से (का)	और ताकि तुम मालूम करो	गिनती	बरस (जमा)	
وَالْحِسَابُ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ﴿١٢﴾ وَكُلَّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ							
और हिसाब	और हर चीज़	हम ने बयान किया है	तफ़्सील के साथ	12	और हर इन्सान	उसको लगा दी (लटका दी)	
طَبْرَهُ فِي عُنُقِهِ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا ﴿١٣﴾							
इस की किस्मत	उसकी गर्दन में	और हम निकालेंगे	उस के लिए	रोज़े कियामत	एक किताब	और उसे पाएगा	खुला हुआ
إِقْرَأْ كِتَابَكَ ۖ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ﴿١٤﴾ مِّنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا							
पढ़ ले	अपना किताब (नामा-ए-आमाल)	काफ़ी है	तू खुद	आज	अपने ऊपर	हिसाब लेने वाला	14 जिस
يَهْتَدَىٰ لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّٰ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ							
उस ने हिदायत पाई	अपने लिए	और जो	गुमराह हुआ	तो सिर्फ़	गुमराह हुआ	अपने ऊपर (अपने बुरे को)	और बोझ नहीं उठाता
وَزِرٌّ أُخْرَىٰ ۖ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ﴿١٥﴾ وَإِذَا أَرَدْنَا							
दूसरे का बोझ	और हम नहीं	अज़ाब देने वाले	जब तक	हम (न) भेजे	कोई रसूल	15	और जब हम ने चाहा
أَنْ تُهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا							
कि हम हलाक करें	कोई बस्ती	हम ने हुक्म भेजा	इस के खुश हाल लोग	तो उन्होंने ने नाफ़रमानी की	उस में	फिर पूरी हो गई	उन पर
الْقَوْلُ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ﴿١٦﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنۢ بَعْدِ							
बात	हलाक किया	फिर हम ने उन्हें हलाक	16	और कितनी	हम ने हलाक कर दी	से	बस्तियां
نُوحٍ ۖ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿١٧﴾							
नूह (अ)	और काफ़ी	तेरा रब	गुनाहों को	अपने बन्दे	खबर रखने वाला	देखने वाला	17

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ نُرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا									
जो कोई	चाहता है	जल्दी	हम जल्दी दे देंगे	उस को इस (दुनिया) में	जितना हम चाहें	जिस को	हम चाहें	फिर	हम ने बना दिया है
لَهُ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَاهَا مَذْمُومًا مَذْحُورًا (۱۸) وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا									
उस के लिए	जहन्नम	वह दाखिल होगा इस में	मज़्मूमत किया हुआ	दूर किया हुआ (धकेला हुआ)	18	जो और	चाहे	आखिरत	और कोशिश की उस ने
سَعِيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعِيَهُمْ مَّشْكُورًا (۱۹) كَلَّا نُمِدُّ هَؤُلَاءِ									
उस की सी कोशिश	और (वशर्त यह कि) हो वह मोमिन	पस यही लोग	है - हुई	उन की कोशिश	कद्र की हुई (मकबूल)	19	हर एक	हम देते हैं	इन को भी
وَهَؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا (۲۰) أَنْظِرْ كَيْفَ									
और उन को भी	से	बख्शिश	तेरा रब	और नहीं है	बख्शिश	तेरा रब	रोकी जाने वाली	20	देखो
فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَلِلْآخِرَةِ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا (۲۱)									
हम ने फज़ीलत दी	उन के बाज़ (एक)	पर	बाज़ (दूसरा)	और अलबत्ता आखिरत	सब से बड़े दरजे	सब से बरतर	और सब से बरतर	21	फज़ीलत में
لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَّخْذُولًا (۲۲) وَقَضَىٰ رَبُّكَ									
तू न ठहरा	अल्लाह के साथ	कोई दूसरा माबूद	पस तू बैठ रहेगा	मज़्मूमत किया हुआ	बेबस हो कर	22	और हुक्म फ़रमा दिया	तेरा रब	
أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ إِنَّمَا يُبَلِّغَنَّ عَنْكَ الْكِبَرُ									
कि न इबादत करो	उस के सिवा	और माँ बाप से	और सुलूक	हस्ते सुलूक	अगर वह पहुँच जाएं	तेरे सामने	बुढ़ापा		
أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا									
उन में से एक	या	वह दोनों	तो न कह	उन्हें	उफ़	और न झिड़को उन्हें	और कहो	उन दोनों से	बात
كَرِيمًا (۲۳) وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا									
अदब के साथ	23	और झुका दे	उन दोनों के लिए	बाजू	आजिज़ी	से	मेहरबानी	और कहो	ऐ मेरे रब
كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا (۲۴) رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ۖ إِنَّ تَكُونُوا صَالِحِينَ									
जैसे	उन्होंने ने मेरी पर्वरिश की	वचपन	24	तुम्हारा रब	खूब जानता है	जो	तुम्हारे दिलों में	अगर	तुम होगे
فَاتَّهَ كَانَ لِلْأَوَابِينَ غَفُورًا (۲۵) وَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ									
तो वेशक वह	है	रुज़्ज करने वालों के लिए	बख्शने वाला	25	और दो तुम	करावतदार	उस का हक़	और मस्कीन	
وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا (۲۶) إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ									
और मुसाफ़िर	और न फुज़ूल खर्ची करो	अन्धा धुन्द	26	वेशक	फुज़ूल खर्च (जमा)	है	भाई (जमा)		
الشَّيْطَانِ ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا (۲۷) وَإِنَّمَا تَعْرِضَنَّ عَنْهُمْ ابْتِغَاءَ									
शैतान (जमा)	और है	शैतान	अपने रब का	नाशुक्रा	27	और अगर	तू मुँह फेर ले	उन से	इन्तिज़ार में
رَحْمَةٍ مِّنْ رَبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا (۲۸) وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ									
रहमत	से	अपना रब	तू उस की उम्मीद रखता है	तो कह	उन से	नर्म की बात	28	और न रख	अपना हाथ
مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسِطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا (۲۹)									
बन्धा हुआ	तक-से	अपनी गर्दन	और न उसे खोल	पूरी तरह खोलना	फिर तू बैठा रह जाए	मलामत ज़दा	थका हुआ	29	

जो कोई जल्दी (दुनिया में) चाहता है, हम उस को जितना चाहे जल्दी (दुनिया में) दे देंगे, फिर हम ने उस के लिए जहन्नम बना दिया है, वह उस में दाखिल होगा मज़्मूमत किया हुआ धकेला हुआ। (18)

और जो कोई आखिरत चाहे और उस के लिए उस की सी कोशिश करे, वशर्त यह कि वह मोमिन हो, पस यही लोग हैं जिन की कोशिश मकबूल हुई। (19)

हम तेरे रब की बख्शिश से उन को भी और उन को भी हर एक को देते हैं और तेरे रब की बख्शिश (किसी पर) रोकी जाने वाली नहीं। (20)

देखो! हम ने किस तरह उन के एक को दूसरे पर फज़ीलत दी और अलबत्ता आखिरत के दरजे सब से बड़े, और फज़ीलत में सब से बरतर हैं। (21)

अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद न ठहरा पस तू बैठ रहेगा मज़्मूमत किया हुआ, बेबस हो कर। (22)

और तेरे रब ने हुक्म फ़रमा दिया कि उस के सिवा किसी और की इबादत न करो, और माँ बाप से हस्ते सुलूक करो, और उन में से एक या वह दोनों तेरे सामने बुढ़ापा को पहुँच जाएं तो उन्हें न कहो उफ़ (भी) और उन्हें न झिड़को, और उन दोनों से अदब के साथ बात कहो (करो)। (23)

और उन के लिए आजिज़ी के (साथ) बाजू झुका दो मेहरबानी से, और कहो ऐ मेरे रब! उन दोनों पर रहम फ़रमा जैसे उन्होंने ने वचपन में मेरी पर्वरिश की। (24)

तुम्हारा रब खूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है, अगर तुम नेक होगे तो वेशक वह रुज़्ज करने वालों को बख्शने वाला है। (25)

और दो तुम करावतदार को उस का हक़, और मस्कीन और मुसाफ़िर को, और अन्धा धुन्द फुज़ूल खर्ची न करो। (26)

वेशक फुज़ूल खर्च शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का नाशुक्रा है। (27)

और अगर तू अपने रब की रहमत (फराख़ दस्ती) के इन्तिज़ार में, जिस की तू उम्मीद रखता है, उन से मुँह फेर ले तो उन से तू कह दिया कर नर्म की बात। (28)

और अपना हाथ अपनी गर्दन तक बन्धा हुआ न रख (कन्जूस न हो जा) और न उसे खोल पूरी तरह (बिलकुल ही) कि फिर तू मलामत ज़दा थका हारा बैठा रह जाए। (29)

वेशक तेरा रब जिस का वह चाहता है रिज़्क़ फ़राख़ कर देता है और (जिस का चाहता है) तंग कर देता है, वेशक वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला, देखने वाला है। (30) और तुम अपनी औलाद को मुफ़लसी के डर से क़त्ल न करो, हम ही उन्हें रिज़्क़ देते हैं और तुम को (भी), वेशक उन का क़त्ल बड़ा गुनाह है। (31) और ज़िना के करीब न जाओ, वेशक यह बेहयाई है और बुरा रास्ता। (32) और उस जान को क़त्ल न करो जिसे (क़त्ल करना) अल्लाह ने ह़राम किया है मगर हक़ के साथ, और जो मज़लूम मारा गया तो तहकीक़ हम ने उस के वारिस के लिए एक इख़्तियार (क़िसास) दिया है, पस हद से न बढ़े क़त्ल में, वेशक वह मदद दिया गया है। (33) और यतीम के माल के पास न जाओ (तसर्हफ़) न करो) मगर इस तरीक़े से जो सब से बेहतर हो, यहां तक कि वह (यतीम) अपनी ज़वानी को पहुँच जाए। और अहद को पूरा करो, वेशक अहद है पुर्सिश किया जाने वाला (ज़रूर पुर्सिश होगी)। (34) और जब तुम माप कर दो तो पैमाना पूरा करो, और वज़न करो सीधी तराजू के साथ, यह बेहतर है और सब से अच्छा है अन्जाम के ऐतिवार से। (35) और उस के पीछे न पड़ जिस का तुझे इल्म नहीं, वेशक कान, और आँख, और दिल, उन में से हर एक पुर्सिश किया जाने वाला है (हर एक की पुर्सिश होगी)। (36) और ज़मीन में इतराता हुआ न चल, वेशक तू ज़मीन को हरगिज़ न चीर डालेगा, और न पहाड़ की बुलन्दी को पहुँचेगा। (37) यह तमाम बुराइयां तेरे रब के नज़्दीक नापसन्दीदा हैं। (38) यह हिक्मत की (उन बातों) में से है जो तेरे रब ने तेरी तरफ़ वहि की है, और न बना अल्लाह के साथ कोई और माबूद कि फिर तु जहन्नम में डाल दिया जाए मलामत ज़दा, धकेला हुआ (रान्दा-ए-दरगाह)। (39) क्या तुम्हें चुन लिया तुम्हारे रब ने बेटों के लिए? और अपने लिए फ़रिशतों को बेटियां बना लिया, वेशक तुम बड़ा बोल बोलते हो। (40)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ								
अपने बन्दों से	है	वेशक वह	और तंग कर देता है	जिस की वह चाहता है	रोज़ी	फ़राख़ कर देता है	तेरा रब	वेशक
خَبِيرًا بَصِيرًا (٣٠) وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةً إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ								
हम रिज़्क़ देते हैं उन्हें	हम	मुफ़लसी	डर	अपनी औलाद	और न क़त्ल करो	30	देखने वाला	ख़बर रखने वाला
وَأَيَّاكُمْ إِنْ قَتَلْتُمْ كَانَ خَطًا كَبِيرًا (٣١) وَلَا تَقْرُبُوا الزَّوْنَى إِنَّهُ كَانَ								
है	वेशक यह	ज़िना	और न करीब जाओ	31	गुनाह बड़ा	है	उन का क़त्ल	वेशक और तुम को
فَاحْشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا (٣٢) وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا								
मगर	अल्लाह ने ह़राम किया	वह जो कि	जान	और न क़त्ल करो	32	रास्ता	और बुरा	बेहयाई
بِالْحَقِّ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوْلِيهِ سُلْطَانًا فَلَا يُسْرِفُ								
पस वह हद से न बढ़े	एक इख़्तियार	इस के वारिस के लिए	तो तहकीक़ हम ने कर दिया	मज़लूम	मारा गया	और जो	हक़ के साथ	
فِي الْقَتْلِ إِنَّهُ كَانَ مَنْصُورًا (٣٣) وَلَا تَقْرُبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي								
इस तरीक़े से	मगर	यतीम का माल	और पास न जाओ	33	मदद दिया गया	है	वेशक वह	क़त्ल में
هِيَ أَحْسَنُ حَتَّى يَبْلُغَ أَشُدَّهُ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ								
है	अहद	वेशक	अहद को	और पूरा करो	अपनी ज़वानी	वह पहुँच जाए	यहां तक कि	सब से बेहतर
مَسْئُولًا (٣٤) وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كَلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ								
सीधी	तराजू के साथ	और वज़न करो	जब तुम माप कर दो	पैमाना	और पूरा करो	34	पुर्सिश किया जाने वाला	
ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا (٣٥) وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ								
वेशक	इल्म	उस का	तेरे लिए- तुझे	जिस का नहीं	और पीछे न पड़ तू	35	अन्जाम के ऐतिवार से	और सब से अच्छा
السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا (٣٦)								
36	पुर्सिश किया जाने वाला	इस से	है	यह	हर एक	और दिल	और आँख	कान
وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ								
पहाड़	और हरगिज़ न पहुँचेगा	ज़मीन	हरगिज़ न चीर डालेगा	वेशक तू	अकड़ कर (इतराता हुआ)	ज़मीन में	और न चल	
طُولًا (٣٧) كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا (٣٨) ذَلِكَ مِمَّا								
उस से जो	यह	38	नापसन्दीदा	तेरा रब	नज़्दीक	उस की बुराई	है	यह
أَوْحَى إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ								
कोई और	माबूद	अल्लाह के साथ	बना	और न	हिक्मत से	तेरा रब	तेरी तरफ़	वहि की
فَتُلْفَى فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَذْهُورًا (٣٩) أَفَأَصْفُكُمْ رَبُّكُم بِالْبَنِينَ								
बेटों के लिए	तुम्हारा रब	क्या तुम्हें चुन लिया	39	धकेला हुआ	मलामत ज़दा	जहन्नम में	फिर तू डाल दिया जाए	
وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا (٤٠)								
40	बड़ा बोल	अलबत्ता कहते हो (बोलते हो)	वेशक तुम	बेटियां	फ़रिशते	से - को	और बना लिया	



وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذَكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤١﴾ قُلْ									
कह दें आप (स)	41	नफ़रत	मगर	बढ़ती उन को	और नहीं	ताकि वह नसीहत पकड़ें	इस कुरआन	में	और अलवत्ता हम ने तरह तरह से बयान किया
لَوْ كَانَ مَعَهُ إِلَهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذَا لَا بَتَعُوا إِلَى ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾									
42	कोई रास्ता	अर्श वाले	तरफ	वह ज़रूर दूँडते	उस सूरत में	वह कहते हैं	जैसे	और माबूद	उस के साथ अगर होते
سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٤٣﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمُوتُ السَّبْعُ									
सात (7)	आस्मान (जमा)	उस की	पाकीज़गी बयान करते हैं	43	बहुत बड़ा (बेनिहायत)	वरतर	वह कहते हैं	उस से जो	और वरतर वह पाक है
وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤٤﴾ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ									
और लेकिन	उस की हम्द के साथ	पाकीज़गी बयान करती है	मगर	कोई चीज़	और नहीं	उन में	और जो	और ज़मीन	
لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤٤﴾ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ									
कुरआन	तुम पढ़ते हो	और जब	44	बख़्शने वाला	वर्दवार	है	बेशक वह	उन की तस्वीह	तुम नहीं समझते
جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَسْتُورًا ﴿٤٥﴾									
45	छुपा हुआ	एक पर्दा	आखिरत पर	ईमान नहीं लाते	वह लोग जो	और दरमियान	तुम्हारे दरमियान	हम कर देते हैं	
وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِذَا									
और जब	गिरानी	उन के कान	और में	वह न समझें उसे	कि	पर्दे	उन के दिल	पर	और हम ने डाल दिए
ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْبُرْجِ نَفُورًا ﴿٤٦﴾ نَحْنُ									
हम	46	नफ़रत करते हुए	अपनी पीठ (जमा)	पर	वह भागते हैं	यकता	कुरआन में	अपना रब	तुम ज़िक्र करते हो
أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَى إِذْ يَقُولُ									
जब कहते हैं	सरगोशी करते हैं	वह	और जब	तेरी तरफ	जब वह कान लगाते हैं	उस को	वह सुनते हैं	जिस गर्ज से	खुब जानते हैं
الظَّالِمُونَ إِنَّ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَسْحُورًا ﴿٤٧﴾ أَنْظِرْ كَيْفَ ضَرَبُوا									
कैसी उन्होंने ने चप्पा की	तुम देखो	47	सिहरज़दा	एक आदमी	मगर	तुम पैरवी करते	नहीं	ज़ालिम (जमा)	
لَكَ الْأَمْثَالُ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٤٨﴾ وَقَالُوا إِذَا كُنَّا									
हम हो गए	क्या - जब	और वह कहते हैं	48	(सीधी) राह	पस वह इस्तिताअत नहीं पाते	सो वह गुमराह हो गए	मिसालें	तुम्हारे लिए	
عِظَامًا وَرُفَاتًا إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٤٩﴾ قُلْ كُونُوا حِجَارَةً									
पत्थर	तुम हो जाओ	कह दें	49	नई	पैदाइश	फिर जी उठेंगे	क्या हम यकीनन	और रेज़ा रेज़ा	हड्डियां
أَوْ حَدِيدًا ﴿٥٠﴾ أَوْ خَلْقًا مِمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ فَسَيَقُولُونَ مَنْ									
कौन	फिर अब कहेंगे	तुम्हारे सीने (खयाल)	में	बड़ी हो	उस से जो	और मख़लूक	या	50	लोहा
يُعِيدُنَا قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ									
तुम्हारी तरफ	तो वह हिलाएंगे (मटकाएंगे)	वार	पहली	तुम्हें पैदा किया	वह जिस ने	फरमा दें	हमे लौटाएगा		
رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَى هُوَ قُلْ عَسَى أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ﴿٥١﴾									
51	करीब	वह हो	कि	शायद	आप (स) फ़रमा दें	वह - यह	कब	और कहेंगे	अपने सर

और हम ने इस कुरआन में तरह तरह से बयान किया है ताकि वह नसीहत पकड़ें, और (इस से) उन्हें नहीं बढ़ती मगर नफ़रत। (41) आप (स) कह दें, अगर जैसे वह कहें हैं उस के साथ और माबूद होते तो उस सूरत में वह अर्श वाले की तरफ ज़रूर दूँडते कोई रास्ता। (42) वह उस से निहायत पाक है और वरतर जो वह कहते हैं। (43) उस की पाकीज़गी बयान करते हैं सातों आस्मान और ज़मीन, और जो उन में है, कोई चीज़ नहीं मगर (हर शौ) पाकीज़गी बयान करती है उस की हम्द के साथ, लेकिन तुम उन की तस्वीह नहीं समझते, बेशक वह वर्दवार, बख़्शने वाला है। (44) और जब तुम कुरआन पढ़ते हो, हम तुम्हारे और उन के दरमियान जो आखिरत पर ईमान नहीं लाते कर देते (डाल देते) हैं एक छुपा हुआ (दबीज़) पर्दा। (45) और हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए के वह इसे न समझें, और उन के कानों में गिरानी है और जब तुम कुरआन में अपने यकता रब का ज़िक्र करते हो तो वह पीठ फेर कर नफ़रत करते हुए भाग जाते हैं। (46) हम खूब जानते हैं कि वह उस को किस गर्ज से सुनते हैं जब वह तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं और जब वह सरगोशी करते हैं (यानी) जब कहते हैं ज़ालिम कि तुम पैरवी नहीं करते मगर एक सिहरज़दा आदमी की। (47) तुम देखो! उन्होंने ने तुम पर कैसी मिसालें चप्पा की, सो वह गुमराह हुए, पस वह (सीधे) रास्ते की इस्तिताअत नहीं पाते। (48) और वह कहते हैं कि क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो गए, क्या हम यकीनन फिर नई पैदाइश (अज़ सर नौ) जी उठेंगे? (49) कह दें तुम पत्थर या लोहा हो जाओ, (50) या कोई और मख़लूक जो तुम्हारे खयालों में उस से भी बड़ी हो। फिर अब कहेंगे हमें कौन लौटाएगा। आप (स) फ़रमा दें, वह जिस ने तुम्हें पैदा किया पहली बार, तो वह तुम्हारी तरफ अपने सर मटकाएंगे और कहेंगे यह कब होगा (क़ियामत कब आएगी)? आप (स) फ़रमा दें, शायद कि करीब ही हो। (51)

जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तो तुम उस की तारीफ के साथ तामील करोगे (क़ब्रों से निकल आओगे) और तुम खयाल करोगे कि तुम (दुनिया में) रहे हो सिर्फ थोड़ी देर। (52) और आप (स) मेरे बन्दों को फ़रमा दें कि (बात) वह कहें जो सब से अच्छी हो, बेशक शैतान उन के दरमियान फ़साद डाल देता है, बेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। (53) तुम्हारा रब तुम्हें खूब जानता है, अगर वह चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर वह चाहे तो तुम्हें अज़ाब दे, और हम ने तुम्हें उन पर दारोगा (बना कर) नहीं भेजा। (54) और तुम्हारा रब खूब जानता है जो कोई आस्मानों में और ज़मीन में है, और तहकीक़ हम ने वाज़ नबियों को वाज़ पर फ़ज़ीलत दी, और हम ने दाऊद (अ) को ज़बूर दी। (55) आप (स) कह दें पुकारो उन्हें जिन को तुम उस के सिवा (माबूद) गुमान करते हो, पस वह इख्तियार नहीं रखते तुम से तकलीफ़ दूर करने का, और न (तकलीफ़) बदलने का। (56) वह लोग जिन्हें यह पुकारते हैं वह (खुद) ढूँढते हैं अपने रब की तरफ़ वसीला कि उन में से कौन बहुत ज़ियादा करीब हो जाए, और उस की रहमत की उम्मीद रखते हैं, और वह उस के अज़ाब से डरते हैं, बेशक तेरे रब का अज़ाब डर (ही) की बात है। (57) और कोई (नाफ़रमान) बस्ती नहीं मगर हम उसे हलाक करने वाले हैं, क़ियामत के दिन से पहले, या उसे सख़्त अज़ाब देने वाले हैं, यह किताब में है लिखा हुआ। (58) और हमें निशानियां भेजने से नहीं रोका मगर (इस बात ने) कि उन को अगलों ने झुटलाया, और हम ने समूद को ऊँटनी दी ज़री-ए-बसीरत ओ इब्रत, उन्होंने ने उस पर जुल्म किया, और हम निशानियां नहीं भेजते मगर (सिर्फ़) डराने को। (59) और जब हम ने तुम से कहा कि बेशक तुम्हारा रब लोगों को (अहाता) काबू किए हुए है, और हम ने जो नुमाइश तुम्हें दिखाई वह हम ने नहीं किया मगर लोगों की आजमाइश के लिए, और थोहर का दरख़्त जिस पर क़ुरआन में लानत की गई है, और हम उन्हें डराते हैं तो उन्हें बढ़ती है सिर्फ़ सरकशी। (60)

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا									
सिर्फ	तुम रहे	कि	और तुम खयाल करोगे	उस की तारीफ के साथ	तो तुम जवाब दोगे (तामील करोगे)	वह पुकारेगा तुम्हें	जिस दिन		
قَلِيلًا ﴿٥٢﴾ وَقُلْ لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ									
फ़साद डालता है	शैतान	वेशक	सब से अच्छी	वह	वह जो	वह कहें	मेरे बन्दों को	और फ़रमा दें	थोड़ी देर
بَيْنَهُمْ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ﴿٥٣﴾ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ									
तुम्हें	खुब जानता है	तुम्हारा रब	53	खुला	दुश्मन	इन्सान का	है	शैतान	वेशक
إِن يَشَأْ يَرْحَمْكُمْ أَوْ إِن يَشَأْ يُعَذِّبْكُمْ وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿٥٤﴾									
54	दारोगा	उन पर	हम ने तुम्हें भेजा	और नहीं	तुम्हें अज़ाब दे	वह चाहे	अगर	या	तुम पर रहम करे वह
وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ									
वाज़	और तहकीक हम ने फज़ीलत दी	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	में	जो कोई	खुब जानता है	और तुम्हारा रब		
النَّبِيِّنَ عَلَى بَعْضٍ وَآتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ﴿٥٥﴾ قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ									
तुम गुमान करते हो	वह जिन को	पुकारो तुम	कह दें	55	ज़बूर	दाऊद (अ)	और हम ने दी	वाज़ पर	नबी (जमा)
مِّنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ﴿٥٦﴾ أُولَٰئِكَ									
वह लोग	56	बदलना	और न	तुम से	तक्लीफ़	दूर करना	पस वह इख्तियार नहीं रखते	उस के सिवा	
الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ									
और वह उम्मीद रखते हैं	ज़ियादा करीब	उन से कौन	वसीला	अपना रब	तरफ़	ढूँढते हैं	वह पुकारते हैं	जिन्हें	
رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ﴿٥٧﴾ وَإِنَّ									
और नहीं	57	डर की बात	है	तेरा रब	अज़ाब	वेशक	उस का अज़ाब	और वह डरते हैं	उस की रहमत
مِّنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَمَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا									
अज़ाब	उसे अज़ाब देने वाले	या	क़ियामत का दिन	पहले	उसे हलाक करने वाले	हम	मगर	कोई बस्ती	
شَدِيدًا كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٥٨﴾ وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ									
हम भेजें	कि	और नहीं हमें रोका	58	लिखा हुआ	किताब में	यह	है	सख़्त	
بِأَلَايَةٍ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصَرَةً									
दिखाने को (ज़रीए वसीरत)	ऊँटनी	समूद	और हम ने दी	अगले लोग (जमा)	उन को	झुटलाया	यह कि	मगर	निशानियाँ
فَظَلَمُوا بِهَا وَمَا نُرْسِلُ بِأَلَايَةٍ إِلَّا تَخْوِيفًا ﴿٥٩﴾ وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ									
तुम्हारा रब	वेशक	तुम से	हम ने कहा	और जब	59	डराने को	मगर	निशानियाँ	और हम नहीं भेजते
أَحَاطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِي آرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ									
और (थोहर का) दरख़्त	लोगों के लिए	आज़माइश	मगर	हम ने तुम्हें दिखाई	वह जो कि	तुमाइश	और हम ने नहीं किया	लोगों को	अहाता किए हुए
الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ وَنُخَوِّفُهُمْ ۖ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ﴿٦٠﴾									
60	बड़ी	सरकशी	मगर (सिर्फ़)	तो नहीं बढ़ती उन्हें	और हम डराते हैं उन्हें	क़ुरआन में	जिस पर लानत की गई		

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ قَالَ								
और जब	हम ने	फ़रिश्तों से	तुम सिज्दा करो	आदम (अ) को	तो उन्होंने ने	सिज्दा किया	सिवाए	इब्लीस
कहा	कहा	से	करो	को	ने	किया	ए	कहा
ءَأَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ﴿٦١﴾ قَالَ أَرَأَيْتَكَ هَذَا الَّذِي كَرَّمْتَ								
क्या मैं	उस को	तू ने पैदा	मिट्टी से	61	उस ने	कहा	यह	वह
सिज्दा करूँ	जिसे	किया	से		कहा		जिसे	जिसे
عَلَىٰ لَبَنٍ أَمْزَتْغَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ لِأَخْتِنِكَ ذُرِّيَّتَهُ إِلَّا								
मुझ पर	अलबत्ता	तू मुझे	तक	रोज़े	जड़ से	उस की	सिवाए	
अगर	दे	कीयामत	तक	दूँगा	औलाद	जड़	औलाद	
فَلِيلًا ﴿٦٢﴾ قَالَ أَذْهَبَ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَأُكُمْ								
चन्द	62	उस ने	तू जा	पस जिस	तेरी	उन में से	तो	तुम्हारी सज़ा
एक		फ़रमाया			पैरवी की		वेशक	जहन्नम
جَزَاءَ مَوْفُورًا ﴿٦٣﴾ وَاسْتَفْزِرُ مَنْ اسْتَطَعَتْ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ								
सज़ा	भरपूर	63	और फुसला ले	जो -	तेरा बस चले	उन में से	अपनी	आवाज़ से
				जिस			से	
وَأَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكُهُمْ فِي الْأَمْوَالِ								
और चढ़ा ला	उन पर	अपने सवार	और पयादे	और उन से	मैं	माल (जमा)		
وَالْأَوْلَادِ وَعَدَّهُمْ وَمَا يَعْدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿٦٤﴾ إِنَّ عِبَادِي								
और औलाद	और वादे	और नहीं उन से	वादा करता	शैतान	मगर (सिर्फ)	धोका	64	वेशक
	कर उन से	वादा करता						मेरे बन्दे
لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ﴿٦٥﴾ رَبُّكُمْ الَّذِي								
नहीं	तेरा	उन पर	जोर -	और	तेरा रब	कारसाज़	65	तुम्हारा रब
			ग़लबा	काफी				वह जो कि
يُزْجِي لَكُمْ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِيَتَّبِعُوا مِنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ								
चलाता है	तुम्हारे	किशती	में	दर्या	ताकि तुम	से	उस का	वेशक
	लिए				तलाश करो		फ़ज़ल	वह है
رَحِيمًا ﴿٦٦﴾ وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ								
निहायत	66	और	तुम्हें छूती	तक्लीफ़	में	गुम	जो	तुम
मेहरबान		जब	(पहुँचती) है			हो जाते हैं		पुकारते थे
إِلَّا إِلَٰهَهُ فَلَمَّا نَجَّكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ الْإِنْسَانُ								
उस के सिवा	फिर जब	वह तुम्हें	खुशकी की तरफ़	तुम फिर जाते हो	और है	इन्सान		
		बचा लाया						
كَفُورًا ﴿٦٧﴾ أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يَخْصِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ								
बड़ा	67	सो क्या तुम	कि	धंसा दे	तुम्हें	खुशकी की तरफ़	या	वह भेजे
नाशुक्रा		निडर हो गए हो						
عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكِيلًا ﴿٦٨﴾ أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ								
तुम पर	पत्थर बरसाने	फिर	तुम न पाओ	अपने लिए	कोई	68	या	तुम बेफ़िक्र
	वाली हवा				कारसाज़			हो गए
يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ								
वह तुम्हें ले जाए	उस में	दोबारा	फिर भेज दे वह	तुम पर	सख्त झोंका	से -	का	
الرَّيْحِ فَيُغْرِقُكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ﴿٦٩﴾								
हवा	फिर तुम्हें	वदले	तुम ने	तुम न पाओ	अपने लिए	हम पर	उस पर	पीछा करने
	गर्क कर दे	में	नाशुक्रा की	फिर		(हमारा)		वाला

और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम (अ) को सिज्दा करो, तो इब्लीस के सिवा उन सब ने सिज्दा किया, उस ने कहा क्या मैं उसे सिज्दा करूँ? जिसे तू ने मिट्टी से पैदा किया। (61)

उस ने कहा भला देख तो यह है वह जिसे तू ने मुझ पर इज़्ज़त दी, अलबत्ता अगर तू मुझे रोज़े क़ियामत तक ढील दे तो मैं चन्द एक के सिवा उस की औलाद को ज़रूर जड़ से उखाड़ दूँगा। (62)

उस ने फ़रमाया तू जा, पस उन में से जिस ने तेरी पैरवी की तो वेशक जहन्नम तुम्हारी सज़ा है, सज़ा भी भरपूर। (63)

और फुसला ले जिस पर तेरा बस चले उन में से अपनी आवाज़ से, और उन पर अपने सवार और पयादे चढ़ा ला, और उन से साझा कर ले माल और औलाद में, और उन से वादे कर, और उन से शैतान का वादा करना सिर्फ़ धोका है॥ (64)

वेशक मेरे बन्दों पर तेरा कोई जोर नहीं, और तेरा रब काफी है कारसाज़। (65)

तुम्हारा रब वह है जो कि तुम्हारे लिए दर्या में किशती चलाता है ताकि तुम उस का फ़ज़ल (रिज़्क) तलाश करो, वेशक वह तुम पर निहायत मेहरबान है। (66)

ओर जब तुम्हें दर्या में तक्लीफ़ पहुँचती है तो गुम हो जाते हैं (भूल जाते हो) जिन्हें उस के सिवा तुम पुकारते थे, फिर जब वह तुम्हें बचा लाया, खुशकी की तरफ़, तो तुम फिर जाते हो, और इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (67)

सो क्या तुम निडर हो गए हो कि वह ज़मीन में धंसा दे तुम्हें खुशकी की तरफ़ (ले जा कर) या तुम पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेजे, फिर तुम अपने लिए कोई कारसाज़ न पाओ। (68)

या तुम बेफ़िक्र हो गए हो कि वह तुम्हें दोबारा उस (दर्या) में ले जाए, फिर तुम पर हवा का सख्त झोंका (तूफ़ान) भेज दे फिर तुम्हें नाशुक्रा के बदले में गर्क कर दे, फिर तुम अपने लिए उस पर हमारा कोई पीछा करने वाला न पाओ। (69)

और तहकीक हम ने औलादे आदम (अ) को इज्जत बखशी, और हम ने उन्हें खुशकी और दर्या में सवारी दी, और हम ने उन्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क दिया, और हम ने उन्हें अपनी बहुत सी मख़लूक पर बढ़ाई दे कर फ़ज़ीलत दी। (70)

जिस दिन हम तमाम लोगों को बुलाएंगे उन के पेशवाओं के साथ, पस जिस को उस की किताब (आमाल नामा) दाएं हाथ में दी गई तो वह लोग अपना आमाल नामा पढ़ेंगे और वह जुल्म न किए जाएंगे एक धागे के बराबर (भी)। (71)

और जो इस दुनिया में अन्धा रहा पस वह आख़िरत में (भी) अन्धा (उठेगा) और रास्ते से भटका हुआ। (72)

और उस वहि से जो हम ने तुम्हारी तरफ़ की है करीब था कि वह तुम्हें उस से बिचला दें (फिसला दें) ताकि हम पर उस (वहि) के सिवा तुम झूट बान्धो और उस सूरत में अलबत्ता वह तुम्हें दोस्त बना लेते। (73)

और अगर हम तुम्हें साबित कदम न रखते तो अलबत्ता तुम उन की तरफ़ झुकने लगते कुछ थोड़ा सा। (74)

उस सूरत में हम तुम्हें ज़िन्दगी में दुगनी (सज़ा) चखाते और दुगनी मौत (के बाद), फिर तुम अपने लिए न पाते हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार। (75)

और तहकीक करीब था कि वह तुम्हें सरज़मीने मक्का से फिसला ही दें ताकि वह तुम्हें यहां से निकाल दें

और उस सूरत में वह तुम्हारे पीछे न ठहर पाते मगर थोड़ा (अर्सा)। (76)

आप (स) से पहले जो रसूल हम ने भेजे (यही) सुन्नत (चली आ रही) है और तुम हमारी सुन्नत में कोई तबदीली न पाओगे। (77)

सूरज ढलने से रात के अन्धेरे तक नमाज़ काइम करें, और सुबह का कुरआन, वेशक सुबह का कुरआन (पढ़ने में फ़िरिशते) हाज़िर होते हैं। (78)

और रात का कुछ हिस्सा कुरआन की तिलावत के साथ वेदार रहें, यह तुम्हारे लिए ज़ाइद है, करीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें मुक़ामे महमूद में खड़ा कर दे। (79)

और आप (स) कहें ऐ मेरे रब! मुझे दाख़िल कर सच्चा दाख़िल करना, और मुझे निकाल सच्चा निकालना (अच्छी तरह), और अपनी तरफ़ से मेरे लिए अज़ा कर ग़ल्वा, मदद देने वाला। (80)

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَهُمْ مِّنَ							
और हम ने उन्हें रिज़्क दिया	और दर्या	खुशकी में	दी	और हम ने उन्हें सवारी	औलादे आदम (अ)	हम ने इज्जत बखशी	और तहकीक
الطَّيِّبِ وَفَضَّلْنَهُمْ عَلَى كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا (٧٠) يَوْمَ							
जिस दिन	70	बढ़ाई दे कर	हम ने पैदा किया (अपनी मख़लूक)	उस से जो	बहुत सी	पर	पाकीज़ा चीज़ों
نَدْعُوا كُلُّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ فَمَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِإِيمَانِهِ فَأُولَٰئِكَ							
तो वह लोग	उस के दाएं हाथ में	उसकी किताब	दिया गया	पस जो	उन के पेशवाओं के साथ	तमाम लोग	हम बुलाएंगे
يَقْرَأُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا (٧١) وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ							
इस (दुनिया) में	और जो रहा	71	एक धागे बराबर	और न वह जुल्म किए जाएंगे	अपना आमाल नामा	पढ़ेंगे	
أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا (٧٢) وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ							
कि तुम्हें बिचला दें	वह करीब था	और तहकीक	72	रास्ता	और बहुत भटका हुआ	अन्धा	पस वह
عَنِ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهُ وَإِذَا لَا تَخَذُوكَ							
अलबत्ता वह तुम्हें बना लेते	और उस सूरत में	इस के सिवा	हम पर	ताकि तुम झूट बान्धो	तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि की	वह जो से
خَلِيلًا (٧٣) وَلَوْ لَا أَن تَبَتُّنَا لَقَدْ كِدْتَ تَرْكُنُ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا (٧٤)							
74	थोड़ा	कुछ	उनकी तरफ़	अलबत्ता तुम झुकने लगते	हम तुम्हें साबित कदम रखते	यह कि	और अगर न 73
إِذَا لَا دَقْنُكَ ضِعْفَ الْحَيَاةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ							
अपने लिए	तुम ने पाते	फिर	मौत	और दुगनी	ज़िन्दगी	दुगनी	उस सूरत में हम तुम्हें चखाते
عَلَيْنَا نَصِيرًا (٧٥) وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفْرِزُونَكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ							
ताकि वह तुम्हें निकाल दें	ज़मीन (मक्का)	से	कि तुम्हें फिसला ही दें	करीब था	और तहकीक	75	कोई मददगार
مِنْهَا وَإِذَا لَا يَلْبَثُونَ خِلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا (٧٦) سَنَّةً مِّنْ قَدْ أَرْسَلْنَا							
हम ने भेजा	जो	सुन्नत	76	थोड़ा	मगर	तुम्हारे पीछे	वह न ठहर पाते
قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا (٧٧) أَقِمِ الصَّلَاةَ لِدُلُوكِ							
ढलने से	नमाज़	काइम करें आप (स)	77	कोई तबदीली	हमारी सुन्नत में	और तुम ने पाओगे	अपने रसूल (जमा)
الشَّمْسِ إِلَىٰ غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ							
है	सुबह का कुरआन	वेशक	सुबह (फ़ज़र)	और कुरआन	रात	अन्धेरा	तक सूरज
مَشْهُودًا (٧٨) وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ عَسَىٰ أَن يَبْعَثَكَ							
कि तुम्हें खड़ा करे	करीब	तुम्हारे लिए	नफ़िल (ज़ाइद)	इस (कुरआन) के साथ	सो वेदार रहें	रात	और कुछ हिस्सा
رُبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا (٧٩) وَقُلْ رَبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ							
सच्चा	दाख़िल करना	मुझे दाख़िल कर	ऐ मेरे रब	और कहें	79	मुक़ामे महमूद	तुम्हारा रब
وَأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَلْ لِّي مِنْ لَّدُنكَ سُلْطَانًا نَّصِيرًا (٨٠)							
80	मदद देने वाला	ग़ल्वा	अपनी तरफ़ से	मेरे लिए	और अज़ा कर	सच्चा	निकालना और मुझे निकाल



وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا (۸۱)							
और कह दें आप (स)	आया हक	और नाबूद हो गया	वातिल	वेशक	वातिल	है ही मिटने वाला	81
وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا (۸۲)							
और हम नाज़िल करते हैं	से	कुरआन	जो	वह शिफा	और रहमत	मोमिनों के लिए	और नहीं ज़ियादा होता
وَنَا بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوسًا (۸۳)							
और पहलू फेर लेता है	और जब	उसे पहुँचती है	बुराई	वह हो जाता	मायूस	83	कह दें हर एक
شَاكِلَتِهِ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدَى سَبِيلًا (۸۴)							
अपना तरीका	सो तुम्हारा परवरदिगार	खूब जानता है	कि वह कौन	ज़ियादा सहीह	रास्ता	84	और आप (स) से पूछते हैं
عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا (۸۵)							
मगर	थोड़ा सा	85	और अगर	हम चाहें	तो अलबत्ता हम ले जाएं	वह जो कि	हम ने वहि की
ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا (۸۶)							
फिर तुम न पाओ	अपने वास्ते	उस के लिए	हमारे (मुकाबले) पर	कोई मददगार	मगर	रहमत	तुम्हारे रब से
كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا (۸۷)							
है	तुम पर	बड़ा	87	कह दें	अगर	जमा हो जाएं	तमाम इन्सान
أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا (۸۸)							
कि	वह लाएं	मानिंद	इस कुरआन	न ला सकेंगे	इस के मानिंद	और अगरचे हो जाएं	उन के वाज़
كُلِّ مَثَلٍ فَبِئْسَ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا كُفُورًا (۸۹)							
हर मिसाल	पस कुबूल न किया	अक्सर लोग	सिवाए	नाशुक्र	89	और वह बोले	हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे
حَتَّى تَفْجَرُ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنْبُوعًا (۹۰)							
यहां तक कि	तू रवां कर दे	हमारे लिए	ज़मीन से	कोई चश्मा	90	या हो जाए	तेरे लिए
نَّحِيلُ وَعَنْبٍ فَتَفْجَرُ الْأَنْهَارُ خِلَالَهَا تَفْجِيرًا (۹۱)							
खजूर (जमा)	और अंगूर	पस तू रवां कर दे	नहरें	उस के दरमियान	वहती हुई	91	या तू गिरा दे
كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسْفًا أَوْ تَأْتِي بَالِ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ قَبِيلًا (۹۲)							
जैसा कि तू कहा करता है	हम पर	टुकड़े	या तू ले आ	अल्लाह को	और फ़रिश्ते	रुबरू	92

और कह दें हक आया और वातिल नाबूद हो गया, वेशक वातिल है ही मिटने वाला (नीस्त औ नाबूद होने वाला)। (81)

और हम कुरआन नाज़िल करते हैं जो मोमिनों के लिए शिफा और रहमत है, और ज़ालिमों के लिए ज़ियादा नहीं होता घाटे के सिवा। (82)

और जब हम इन्सान को नेमत वख़शते हैं वह रूगर्दान हो जाता है, और पहलू फेर लेता है, और जब उसे बुराई पहुँचती है तो वह मायूस हो जाता है। (83)

कह दें हर एक अपने तरीके पर काम करता है, सो तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है कि कौन ज़ियादा सहीह रास्ते पर है? (84)

और वह आप (स) से रूह के सुतअल्लिक पूछते हैं, आप (स) कह दें रूह मेरे रब के हुक्म से है, और तुम्हें इल्म नहीं दिया गया मगर थोड़ा सा। (85)

और अगर हम चाहें तो अलबत्ता हम ले जाएं (सल्व कर लें) जो वहि हम ने तुम्हारी तरफ़ की है, फिर तुम उस के लिए अपने वास्ते न पाओ हमारे

मुकाबले पर कोई मददगार। (86) मगर तुम्हारे रब की रहमत से है (कि ऐसा नहीं होता), वेशक तुम पर उस का बड़ा फ़ज़ल है। (87)

आप (स) कह दें अगर तमाम इन्सान और जिन (इस बात) पर जमा हो जाएं कि वह इस कुरआन के मानिंद ले आए तो वह इस के मानिंद न ला सकेंगे अगरचे उन के वाज़, वाज़ के लिए (वह एक दूसरे के) मददगार हो जाएं। (88)

और हम ने लोगों के लिए इस कुरआन में तरह तरह से बयान कर दी है हर मिसाल, पस अक्सर लोगों ने नाशुक्र के सिवा कुबूल न किया। (89)

और वह बोले कि हम तुझ पर हरगिज़ ईमान न लाएंगे, यहां तक कि तू हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा रवां कर दे। (90)

या तेरे लिए खजूरों और अंगूर का एक बाग़ हो, पस तू उस के दरमियान वहती नहरें रवां कर दे। (91)

या जैसे तू कहा करता है हम पर आस्मान के टुकड़े गिरा दे, या अल्लाह को और फ़रिश्तों को रूबरू ले आ। (92)

या तेरे लिए सोने का एक घर हो,  
या तू आस्मान में चढ़ जाए, और हम  
हरगिज़ तेरे चढ़ने को न मानेंगे जब  
तक तू हम पर एक किताब न उतारे  
जिसे हम पढ़ लें, आप (स) कह दें  
पाक है मेरा रब, मैं सिर्फ एक बशर  
हूँ (अल्लाह का) रसूल। (93)  
और लोगों को (किसी बात ने) नहीं  
रोका कि वह ईमान लाएँ जब उन  
के पास हिदायत आ गई, मगर यह  
कि उन्होंने न कहा क्या अल्लाह ने  
एक बशर को रसूल (बना कर)  
भेजा है? (94)  
आप (स) कह दें, अगर होते ज़मीन  
में फ़रिश्ते चलते फिरते, इत्मीनान  
से रहते तो हम ज़रूर उन पर  
आस्मानों से फ़रिश्ते रसूल  
(बना कर) उतारते। (95)  
आप (स) कह दें मेरे और तुम्हारे  
दरमियान अल्लाह की गवाही काफी  
है, वेशक वह अपने बन्दों का ख़बर  
रखने वाला, देखने वाला है। (96)  
और जिसे अल्लाह हिदायत दे पस  
वही हिदायत पाने वाला है, और  
जिसे वह गुमराह करे पस तू उन  
के लिए उस के सिवा हरगिज़  
कोई मददगार न पाएगा, और  
हम क़ियामत के दिन उन्हें उन के  
चहरों के बल अन्धे और गुंगे और  
वहरे उठाएंगे, उन का ठिकाना  
जहन्नम है, जब कभी जहन्नम की  
आग बुझने लगेगी हम उन के लिए  
और भड़का देंगे। (97)  
यह उन की सज़ा है क्यों कि उन्होंने  
ने हमारी आयतों का इन्कार किया  
और उन्होंने ने कहा क्या जब हम  
हड्डियाँ और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे,  
क्या हम अज़ सरे नौ पैदा कर के  
ज़रूर उठाए जाएंगे? (98)  
क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि अल्लाह  
जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा  
किया है इस पर कादिर है कि उन  
जैसे पैदा करे, और उस ने उन के  
लिए मुक़र्रर किया एक वक़्त, इस में  
कोई शक नहीं, ज़ालिमों ने नाशुकी  
के सिवा कुबूल न किया। (99)  
आप कह दें अगर तुम मालिक होते  
मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों के,  
तो तुम ख़र्च हो जाने के डर से  
ज़रूर बन्द रखते, और इन्सान  
बहुत तंग दिल है। (100)

أَوْ يَكُونُ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُحْرَفٍ أَوْ تَرْقَىٰ فِي السَّمَاءِ وَلَنْ نُؤْمِنَ									
और हम हरगिज़ न मानेंगे	आस्मान में	तू चढ़ जाए	या	सोना	से - का	एक घर	तेरे लिए	हो	या
لِرُقَيْكَ حَتَّى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَقْرُؤُهُ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ كُنْتُ									
नहीं हूँ मैं	मेरा रब	पाक है	आप कह दें	हम पढ़ लें जिसे	एक किताब	हम पर	तू उतारे	यहां तक कि	तेरे चढ़ने को
إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا ﴿٩٣﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمْ									
उन के पास आ गई	जब	कि वह ईमान लाएं	लोग (जमा)	रोका	और नहीं	93	रसूल	एक बशर	मगर - सिर्फ
الْهُدَىٰ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا ﴿٩٤﴾ قُلْ لَوْ كَانَ									
अगर होते	कह दें	94	रसूल	एक बशर	अल्लाह	क्या भेजा	उन्होंने ने कहा	यह कि	मगर
فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَّمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ									
आस्मान से	उन पर	हम ज़रूर उतारते	इत्मीनान से रहते	चलते फिरते	फ़रिश्ते	ज़मीन में			
مَلَكًا رَسُولًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ إِنَّهُ كَانَ									
है	वेशक वह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	गवाह	अल्लाह की	काफी है	कह दें	95	रसूल
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾ وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ									
और जिसे	हिदायत पाने वाला	पस वही	अल्लाह	हिदायत दे	और जिसे	96	देखने वाला	ख़बर रखने वाला	अपने बन्दों का
يُضِلُّ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ									
क़ियामत के दिन	और हम उठाएंगे उन्हें	उस के सिवा	मददगार	उन के लिए	पस तू हरगिज़ न पाएगा	गुमराह करे			
عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَبُكْمًا وَصُمًّا مَّاوَهُمْ جَهَنَّمَ كُلَّمَا خَبَتْ									
बुझने लगेगी	जब कभी	जहन्नम	उन का ठिकाना	और बहरे	और गुंगे	अन्धे	उन के चहरे	पर - बल	
زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا ﴿٩٧﴾ ذَلِكَ جَزَاؤُهُمْ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا وَقَالُوا									
और उन्होंने ने कहा	हमारी आयतों का	उन्होंने ने इन्कार किया	क्यों कि वह	उन की सज़ा	यह	97	भड़काना	हम उन के लिए ज़ियादा कर देंगे	
ءِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرَفَاتًا ءَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾									
98	अज़ सरे नौ	पैदा कर के	ज़रूर उठाए जाएंगे	क्या हम	और रेज़ा रेज़ा	हड्डियां	हो जाएंगे हम	क्या जब	
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ فَادِرٌ عَلَىٰ									
पर	कादिर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	जिस ने	अल्लाह	कि	उन्होंने ने देखा	क्या नहीं
أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَا رَيْبَ فِيهِ فَاَبَى الظَّالِمُونَ									
ज़ालिम (जमा)	तो कुबूल न किया	उस में	नहीं शक	एक वक़्त	उन के लिए	उस ने मुक़र्रर किया	उन जैसे	कि वह पैदा करे	
إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٩﴾ قُلْ لَوْ أَنْتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذَا									
जब	मेरा रब	रहमत	ख़ज़ाने	मालिक होते	तुम	अगर	आप कह दें	99	नाशुक्की के सिवा
لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَثُورًا ﴿١٠٠﴾									
100	तंग दिल	इन्सान	और है	ख़र्च हो जाना	डर से	तुम ज़रूर बन्द रखते			

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَمَسَّلَ بَنِي إِسْرَءِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ							
और अलबत्ता हम ने दी	मूसा (अ)	नौ (9)	खुली निशानियां	पस पूछ तू	वनी इस्राईल	जब	उन के पास आया
فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يُمُوسَى مَسْحُورًا ۝۱۰۱ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ							
तो कहा	उस को	फिरऔन	वेशक मैं	तुझ पर गुमान करता हूँ	ऐ मूसा	जादू किया गया	101
مَا أَنْزَلَ هَؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِصَآئِرٍ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ							
नहीं नाज़िल किया	इस को	मगर	आस्मानों और ज़मीन का परवरदिगार	वसीरत (जमा)	और	तुझ पर गुमान करता हूँ	
يُفِرْعَوْنُ مَثْبُورًا ۝۱۰۲ فَآرَادَ أَنْ يَسْتَفِزَّهُمْ مِنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ							
ऐ फिरऔन	हलाक शुदा	102	पस उस ने इरादा किया	कि	उन्हें निकाल दे	ज़मीन से	तो हम ने उसे गर्क कर दिया
وَمَنْ مَعَهُ جَمِيعًا ۝۱۰۳ وَقُلْنَا مِنْ بَعْدِهِ لِبَنِي إِسْرَءِيلَ اسْكُنُوا							
और जो	उसके साथ	सब	103	और हम ने कहा	उस के बाद	वनी इस्राईल को	तुम रहो
الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ۝۱۰۴ وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ							
ज़मीन (मुल्क)	फिर जब	आएगा	आखिरत का वादा	हम ले आएंगे	तुम को	जमा कर के	104
وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝۱۰۵ وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ							
और सच्चाई के साथ	नाज़िल हुआ	और नहीं	हम ने आप (स) को भेजा	मगर खुशखबरी देने वाला	और डर सुनाने वाला	105	और कुरआन जुदा किया
لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى مُكْثٍ وَنَزَّلْنَاهُ تَنْزِيلًا ۝۱۰۶ قُلْ آمِنُوا بِهِ أَوْ							
ताकि तुम उसे पढ़ो	पर	लोग	ठहर ठहर कर	और हम ने उसे नाज़िल किया	आहिस्ता आहिस्ता	106	आप कह दें
لَا تُؤْمِنُوا إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَى عَلَيْهِمْ							
तुम ईमान न लाओ	वेशक	वह लोग जिन्हें	इल्म दिया गया	इस से क़व्ल	जब	वह पढ़ा जाता है	उन के सामने
يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ۝۱۰۷ وَيَقُولُونَ سُبْحَنَ رَبِّنَا إِن كَانَ							
वह गिर पड़ते हैं	ठोड़ियों के बल	सिज्दा करते हुए	107	और वह कहते हैं	पाक है	हमारा रब	वेशक है
وَعَدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ۝۱۰۸ وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ							
वादा	हमारा रब	ज़रूर पूरा हो कर रहने वाला	108	और वह गिर पड़ते हैं	ठोड़ियों के बल	रोते हुए	और उन में ज़ियादा करता है
خُشُوعًا ۝۱۰۹ قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوَادْعُوا الرَّحْمَنَ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ							
आजिज़ी	109	आप कह दें	तुम पुकारो	अल्लाह	या तुम पुकारो	रहमान	जो कुछ भी
الْأَسْمَاءِ الْحُسْنَىٰ ۝ وَلَا تَجْهَرُ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافُتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ							
सब से अच्छे नाम	और न बुलन्द करो तुम	अपनी नमाज़ में	और न विलकुल पस्त करो तुम	उस में	और	उस के दरमियान	
سَبِيلًا ۝۱۱۰ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ							
रास्ता	110	और कह दें	तमाम तारीफ़ें	अल्लाह के लिए	वह जिस ने	नहीं बनाई	कोई औलाद
شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِّنَ الدُّنْيَا وَكَبِيرُهُ تَكْبِيرًا ۝۱۱۱							
कोई शरीक	सलतनत में	और नहीं है	उस का	कोई मददगार	से,	नातवानी	और उस की बड़ाई करो
۝۱۱۱							
111							

और हम ने मूसा (अ) को नौ (9) खुली निशानियां दीं, पस बनी इस्राईल से पूछ, जब वह (मूसा अ) उन के पास आए तो फिरऔन ने उस को कहा वेशक मैं गुमान करता हूँ तुम पर जादू किया गया है (सिहर ज़दा हो)। (101) उस ने कहा, अलबत्ता तू जान चुका है कि इस को नाज़िल नहीं किया मगर आस्मानों और ज़मीन के परवरदिगार ने वसीरत (समझ बूझ की बातें), और ऐ फिरऔन! वेशक मैं तुझे गुमान करता हूँ हलाक शुदा (हलाक हुआ चाहता है)। (102) पस उस ने इरादा किया कि उन्हें सरज़मीने (मिस्त्र) से निकाल दे तो हम ने उसे और जो उस के साथ थे सब को गर्क कर दिया। (103) और हम ने कहा उस के बाद बनी इस्राईल को कि तुम उस मुल्क में रहो, फिर जब आखिरत का वादा आएगा हम तुम सब को ले आएंगे जमा कर के (समेट कर)। (104) और हम ने इसे (कुरआन को) हक के साथ नाज़िल किया और वह सच्चाई के साथ नाज़िल हुआ, और हम ने आप (स) को नहीं भेजा मगर खुश खबरी देने वाला और डर सुनाने वाला। (105) और कुरआन हम ने जुदा जुदा कर के (थोड़ा थोड़ा) नाज़िल किया ताकि तुम लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ो, और हम ने उसे आहिस्ता आहिस्ता (बतदरीज) नाज़िल किया। (106) आप (स) कह दें तुम उस पर ईमान लाओ या न लाओ, वेशक जिन्हें इस से क़व्ल इल्म दिया गया है, जब वह उन के सामने पढ़ा जाता है तो वह सिज्दा करते हुए ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं। (107) और वह कहते हैं हमारा रब पाक है, वेशक हमारे रब का वादा ज़रूर पूरा हो कर रहने वाला है। (108) और वह रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं और यह (कुरआन) उन में आजिज़ी और ज़ियादा करता है। (109) आप (स) कह दें तुम पुकारो अल्लाह (कह कर) या पुकारो रहमान (कह कर) जो कुछ भी पुकारोगे उसी के लिए हैं सब से अच्छे नाम, और न अपनी नमाज़ में (आवाज़ बहत) बुलन्द करो और न उस में विलकुल पस्त करो (बल्कि) उस के दरमियान का रास्ता ढूँडो। (110) और आप (स) कह दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह जिस ने कोई औलाद नहीं बनाई, और सलतनत में उस का कोई शरीक नहीं, और न कोई उस का मददगार है नातवानी के सबब, और खूब उस की बड़ाई (वयान) करो। (111)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद स) पर (यह) किताब नाज़िल की, और उस में कोई कजी न रखी। (1)

(बल्कि) ठीक सीधी (उतारी) ताकि डर सुनाए उस की तरफ़ से सख़्त अज़ाब से, और मोमिनों को खुशख़बरी दे, जो अच्छे अमल करते हैं कि उन के लिए अच्छा अजर है, (2)

वह उस में हमेशा रहेंगे। (3)

और वह उन लोगों को डराए जिन्होंने ने कहा अल्लाह ने बेटा बना लिया है। (4)

उस का न उन्हें कोई इल्म है और न उन के बाप दादा को था, बड़ी है बात (जो) उन के मुँह से निकलती है, वह नहीं कहते मगर झूट। (5)

तो शायद आप (स) उन के पीछे अपनी जान को हलाक करने वाले हैं, अगर वह ईमान न लाए इस बात पर, ग़म के मारे। (6)

जो कुछ ज़मीन में है, बेशक हम ने उसे उस के लिए ज़ीनत बनाया है ताकि हम उन्हें आज़माएं कि उन में कौन है अमल में बेहतर। (7)

और जो कुछ इस (ज़मीन) पर है बेशक हम उसे (नाबूद कर के) साफ़ चटयल मैदान करने वाले हैं। (8)

क्या तुम ने गुमान किया? कि कहफ़ (ग़ार) और रक़ीम वाले हमारी निशानियों में से अजीब थे। (9)

जब उन जवानों ने ग़ार में पनाह ली तो उन्होंने ने कहा, ऐ हमारे रब! हमें अपनी तरफ़ से रहमत दे, और हमारे काम में दुरुस्ती मुहैया कर। (10)

पस हम ने पर्दा डाला उन के कानों पर, उन्हें ग़ार में कई साल (सुलाया)। (11)

آيَاتُهَا ١١٠ ﴿١٨﴾ سُورَةُ الْكَهْفِ ﴿١٢﴾ زُكُوعَاتُهَا ١٢									
रुक़आत 12		(18) सूरतुल कहफ़ ग़ार				आयात 110			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ﴿١﴾ فِيمَا لَيْنُذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ﴿٢﴾ مَّا كَثِيرٍ فِيهِ أَبَدًا ﴿٣﴾ وَيُنذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ﴿٤﴾ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ إِنَّ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ﴿٥﴾ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلَى آثَارِهِمْ إِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ﴿٦﴾ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لِّهَا لِنَبْلُوهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ﴿٧﴾ وَإِنَّا لَجَعَلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ﴿٨﴾ أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَّتِنَا عَجَبًا ﴿٩﴾ إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ﴿١٠﴾ فَضْرَبْنَا عَلَى آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ﴿١١﴾									
और न रखी	किताब (कुरआन)	अपने बन्दे पर	नाज़िल की	वह जिस ने	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें			
और खुशख़बरी दे	उस की तरफ़ से	सख़्त	अज़ाब	ताकि डर सुनाए	ठीक सीधी	1	कोई कजी	उस में	
2									
अच्छा अजर	कि उन के लिए	अच्छे	अमल करते हैं	वह जो	मोमिनों				
अल्लाह ने बना लिया है	वह जिन लोगों ने कहा	और वह डराए	3	हमेशा	उस में	वह रहेंगे			
वात	बड़ी है	उन के पाप दादा	और न	कोई इल्म	उन को उस का	नहीं	4	बेटा	
तो शायद आप	5	झूट	मगर	वह कहते हैं	नहीं	उन के मुँह (जमा)	से	निकलती है	
वात	इस	वह ईमान न लाए	अगर	उन के पीछे	पर	अपनी जान	हलाक करने वाला		
कौन उन में से	ताकि हम उन्हें आज़माएं	उसके लिए	ज़ीनत	ज़मीन पर	जो	हम ने बनाया	बेशक हम	6	ग़म के मारे
8									
वंजर (चटयल)	साफ़ मैदान	जो उस पर	अलबत्ता करने वाले	और बेशक हम	7	अमल में	बेहतर		
से	वह थे	और रक़ीम	असहाबे कहफ़ (ग़ार वाले)	कि	क्या तुम ने गुमान किया?				
ऐ हमारे रब	तो उन्होंने ने कहा	ग़ार	तरफ़ - में	जवान (जमा)	पनाह ली	जब	9	हमारी निशानियां अजीब	
10									
दुरुस्ती	हमारे काम में	हमारे लिए	और मुहैया कर	रहमत	अपनी तरफ़ से	हमें दे			
11									
कई साल	ग़ार में	उन के कान (जमा)	पर	पस हम ने मारा (पर्दा डाला)					



ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوا أَمَدًا ﴿١٢﴾								
फिर	हम ने उन्हें उठाया	हम देखें	ताकि हम	कौन-किस	दोनों गिरोह	हिसाब रखा	कितनी देर रहे	मुद्दत
نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ إِنَّهُمْ فِتْنَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ﴿١٣﴾ وَرَبَطْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ الْأَرْضِ لَن نَّدْعُوهُ مِنْ دُونِهِ إِلَهًا لَقَدْ قُلْنَا إِذَا شَطَطًا ﴿١٤﴾ هَؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ لَوْ لَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾ وَإِذْ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَاوَّا إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَهَيِّئْ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ مَرْفَقًا ﴿١٦﴾ وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَزُورُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِنْهُ ذَٰلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضِلِّ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾ وَتَحْسَبُهُمْ آيْقَاطًا وَهُمْ رُقُودٌ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعبًا ﴿١٨﴾								
हम	बयान करते हैं	तुझ से	उनका हाल	ठीक ठीक	वेशक वह	चन्द नौजवान	वह ईमान लाए	अपने रब पर
और हम ने और ज़ियादा दी उन्हें	हिदायत	13	और हम ने गिरह लगादी	पर	उन के दिल	जब	वह खड़े हुए	तो उन्होंने ने कहा
हमारा रब	आस्मानों और ज़मीन का परवरदिगार	हरगिज़ न	हम पुकारेंगे	उस के सिवा	कोई माबूद	अलबत्ता हम ने कही		
उस वक़्त	बेजा बात	14	यह है	हमारी कौम	उन्होंने ने बना लिए	उस के सिवा	और माबूद	
क्यों वह नहीं लाते	उन पर	कोई दलील	वाज़ेह	पस कौन	बड़ा ज़ालिम	उस से जो	इफ़तिरा करे	
पर	अल्लाह	झूट	15	और जब	तुम ने उन से किनारा कर लिया	और जो वह पूजते हैं	अल्लाह के सिवा	
तो पनाह लो	तरफ़ - में	ग़ार	फैला देगा तुम्हें	तुम्हारा रब	से	अपनी रहमत	मुहैया करेगा	तुम्हारे लिए
से	तुम्हारे काम	सहूलत	16	और तुम देखोगे	सूरज (धूप)	जब	वह निकलती है	वच कर जाती है
उन का ग़ार	दाएं तरफ़	और जब	वह ढल जाती है	उन से कतरा जाती है	बाएं तरफ़			
और वह	में	खुली जगह	उस (ग़ार) की	यह	से	अल्लाह की निशानियां	जो - जिसे	हिदायत दे अल्लाह
पस वह हिदायत याफ़ता	और जो - जिस	वह गुमराह करे	पस तू हरगिज़ न पाएगा	उस के लिए	कोई रफ़ीक़	सीधी राह दिखाने वाला	17	
और तू उन्हें समझे	वेदार	हालांकि वह	सोए हुए	और हम बदलवाते हैं उन्हें	दाएं तरफ़			
और बाएं तरफ़	और उन का कुत्ता	और उन का कुत्ता	फैलाए हुए	दोनों हाथ	देहलीज़ पर	अगर तू झांकता		
उन पर	तो पीठ फेरता	उन से	भागता हुआ	और तू भर जाता	उन से	दहशत में	18	

फिर हम ने उन्हें उठाया ताकि हम देखें दोनों गिरोहों में से किस ने खूब याद रखा है कि वह कितनी मुद्दत (ग़ार में) रहे? (12)

हम तुझ से ठीक ठीक उन का हाल बयान करते हैं, वह चन्द नौजवान थे, वह ईमान लाए अपने रब पर, और हम ने उन्हें हिदायत और ज़ियादा दी। (13)

और हम ने उन के दिलों पर गिरह लगा दी (दिल पुख्ता कर दिए) जब वह खड़े हुए तो उन्होंने ने कहा हमारा रब परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का, हम उस के सिवाए हरगिज़ किसी को माबूद न पुकारेंगे (वरना) अलबत्ता उस वक़्त हम ने बेजा बात कही। (14)

यह है हमारी कौम, उस ने उस के सिवा और माबूद बना लिए, वह उन पर कोई वाज़ेह दलील क्यों नहीं लाते? पस कौन है उस से बड़ा ज़ालिम जो अल्लाह पर झूट इफ़तिरा करे। (15)

और जब तुम ने उन से और जिन को वह अल्लाह के सिवा पूजते हैं उन से किनारा कर लिया है तो ग़ार में पनाह लो, तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैलादेगा, और तुम्हारे काम में तुम्हारे लिए सहूलत मुहैया करेगा। (16)

और तुम देखोगे जब धूप निकलती है, वह उन की ग़ार से दाएं तरफ़ वच कर जाती है, और जब वह ढलती है तो उन से बाएं तरफ़ को कतरा जाती है, और वह ग़ार की खुली जगह में है, यह अल्लाह की निशानियां में से है, जिसे हिदायत दे अल्लाह, सो वही हिदायत याफ़ता है और जिसे वह गुमराह करे तो उस के लिए हरगिज़ कोई रफ़ीक़, सीधी राह दिखाने वाला न पाओगे। (17)

और तू उन्हें वेदार समझे हालांकि वह सोए हुए हैं और हम उन्हें दाएं तरफ़ और बाएं तरफ़ (करवट) बदलवाते हैं, और उन का कुत्ता दोनों हाथ (पंजे) फैलाए हुए है देहलीज़ पर, अगर तू उन पर झांकता तो उन से पीठ फेर कर भागता, और उन से दहशत में भर जाता। (18)

और हम ने उसी तरह उन्हें उठाया ताकि वह आपस में एक दूसरे से सवाल करें, उन में से एक कहने वाले ने कहा तुम (यहां) कितनी देर रहे? उन्होंने ने कहा हम रहे एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा, उन्होंने ने कहा तुम्हारा रब खूब जानता है तुम कितनी मुद्दत रहे हो? पस अपने में से एक को अपना यह रुपया दे कर भेजो शहर की तरफ, पस वह देखे कौन सा खाना पाकीज़ा तर है, तो वह उस से तुम्हारे लिए ले आए और नर्मी करे और किसी को तुम्हारी ख़बर न दे बैठे। (19)

वेशक अगर वह तुम्हारी ख़बर पालेंगे तो वह तुम्हें संगसार कर देंगे या तुम्हें लौटा लेंगे अपनी मिल्लत में, और उस सूरत में तुम हरगिज़ कभी फ़लाह न पाओगे। (20)

और उसी तरह हम ने (लोगों को) उन पर ख़बरदार किया ताकि वह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और यह कि क़ियामत में कोई शक नहीं, (याद करो) जब वह उन के मामले में आपस में झगड़ते थे, तो उन्होंने ने कहा उन पर एक इमारत बनाओ, उन का रब उन्हें खूब जानता है। जो लोग उन के काम पर ग़ालिव थे उन्होंने ने कहा हम ज़रूर बनाएंगे उन पर एक मसजिद (इबादतगाह)। (21)

अब (कुछ) कहेंगे वह तीन हैं चौथा उन का कुत्ता है, और (कुछ) कहेंगे वह पाँच हैं और उन का छटा है (अटकल के तुक्के चला रहे हैं), कुछ कहेंगे वह सात हैं और आठवां उन का कुत्ता है, आप (स) कह दें मेरा रब खूब जानता है उन की तेदाद, उन्हें सिर्फ़ थोड़े जानते हैं, पस सरसरी बहस के सिवा उन के (वारे में) न झगड़ो, और न पूछो उन के वारे में उन में से किसी से। (22)

وَكَذَلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ							
और उसी तरह	हम ने उन्हें उठाया	ताकि वह एक दूसरे से सवाल करें	आपस में	कहा	एक कहने वाला	उन में से	
كَمْ لَبِثْتُمْ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضُ يَوْمٍ قَالُوا رَبُّكُمْ							
तुम कितनी देर रहे	उन्होंने ने कहा	हम रहे	एक दिन	या	एक दिन का कुछ हिस्सा	उन्होंने ने कहा	तुम्हारा रब
أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هَذِهِ							
खूब जानता है	जितनी मुद्दत तुम रहे	पस भेजो तुम	अपने में से एक	अपना रुपया दे कर	यह		
إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ							
तरफ़	शहर	पस वह देखे	कौन सा	पाकीज़ा तर	खाना	तो वह तुम्हारे लिए ले आए	खाना
مِّنْهُ وَلْيَسْلُطْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ۝١٩							
उस से	और नर्मी करे	और वह ख़बर न दे बैठे	तुम्हारी	किसी को	19		
إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ							
वेशक वह	अगर वह ख़बर पा लेंगे	तुम्हारी	तुम्हें संगसार कर देंगे	या	तुम्हें लौटा लेंगे		
فِي مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا إِذَا أَبَدًا ۝٢٠ وَكَذَلِكَ أَعَثَرْنَا							
में	अपनी मिल्लत	और तुम हरगिज़ फ़लाह न पाओगे	उस सूरत में कभी	20	और उसी तरह	हम ने ख़बरदार कर दिया	
عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ							
उन पर	ताकि वह जान लें	कि	अल्लाह का वादा	सच्चा	और यह कि	क़ियामत	कोई शक नहीं
فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرُهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا							
उस में	जब	वह झगड़ते थे	आपस में	उन का मामला	तो उन्होंने ने कहा	बनाओ	
عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا							
उन पर	एक इमारत	उनका रब	उन्हें खूब जानता है	कहा	वह लोग जो ग़ालिव थे		
عَلَى أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ۝٢١ سَيَقُولُونَ							
पर	अपने काम	हम ज़रूर बनाएंगे	उन पर	एक मसजिद	21	अब वह कहेंगे	
ثَلَاثَةَ رَّابِعُهُمْ كُلُّهُمْ ۖ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كُلُّهُمْ							
तीन	उन का चौथा	उन का कुत्ता	उन का कुत्ता	और वह कहेंगे	पाँच	उन का छटा	उन का कुत्ता
رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كُلُّهُمْ ۖ قُلْ							
बात फ़ैकना	बिन देखे	और कहेंगे वह	सात	और उन का आठवां	उन का कुत्ता	कह दें आप (स)	
رَبِّي أَعْلَمُ بَعْدَتِهِمْ مَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۖ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ							
मेरा रब	खूब जानता है	उन की गिनती (तेदाद)	उन्हें नहीं जानते हैं	मगर सिर्फ़	थोड़े	पस न झगड़ो	उन में
إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۝٢٢							
सिवाए	बहस	ज़ाहिरी (सरसरी)	और न	पूछ	उनके (वारे में)	उन में से	किसी
22							

نصف القرآن باعتبار عدد الحروف بان الشاء بعد الياء  
من النصف الاول واللام الثانية من النصف الاخير ١٢

ع ١٥

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَآئٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَلِكْ غَدًا ﴿٢٣﴾ إِلَّا أَنْ يَشَآءَ								
चाहे	यह कि	मगर	23	कल	यह	करने वाला हूँ	कि मैं	किसी काम को और हरगिज़ न कहना तुम
اللَّهُ ۚ وَادْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَى أَنْ يَهْدِيَنِي								
कि मुझे हिदायत दे	उम्मीद है	और कह		तू भूल जाए	जब	अपना रब	और तू याद कर	अल्लाह
رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾ وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ								
अपना ग़ार	में	और वह रहे	24	भलाई	उस से	बहुत ज़ियादा करीब की	मेरा रब	
ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا								
कितनी मुदत वह ठहरे	खूब जानता है	अल्लाह	आप (स) कह दें	25	नौ (9)	और उन के ऊपर	साल	तीन सौ (300)
لَهُ غَيْبُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ								
और क्या वह सुनता है	क्या वह देखता है	और ज़मीन	आस्मानों	ग़ैब	उसी को			
مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ﴿٢٦﴾								
26	किसी को	अपने हुक्म में	और वह शरीक नहीं करता	कोई मददगार	उस के सिवा	उन के लिए नहीं		
وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَتِهِ								
उस की बातों को	नहीं कोई बदलने वाला	आप का रब	किताब	से	आप की तरफ़	जो वहि की गई	और आप पढ़ें	
وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ								
साथ	अपना नफ्स (अपना आप)	और रोके रखो	27	कोई पनाह गाह	उस के सिवा	और तुम हरगिज़ न पाओगे		
الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدْوَةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ								
उस का चहरा (रज़ा)	वह चाहते हैं	और शाम	सुबह	अपना रब	वह लोग जो पुकारते हैं			
وَلَا تَعْدُ عَيْنُكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الدُّنْيَا								
दुनिया	ज़िन्दगी	आराइश	तुम तलबगार हो जाओ	उन से	तुम्हारी आँखें	न दौड़ें (न फिरे)		
وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ								
और है	अपनी खाहिश	और पीछे पड़ गया	अपना ज़िक्र	से	उस का दिल	हम ने ग़ाफ़िल कर दिया	जो - जिस	और कहा न मानो
أَمْرُهُ فُرُطًا ﴿٢٨﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُم ۖ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ								
सो ईमान लाए	चाहे	पस जो	तुम्हारा रब	से	हक़	और कह दें	28	हद से बढ़ा हुआ
وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ ۖ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا								
आग	ज़ालिमों के लिए	हम ने तैयार किया	बेशक हम	सो कुफ़ करे (न माने)	चाहे	और जो		
أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ								
पानी से	वह दाद रसी किए जाएंगे	वह फ़र्याद करेंगे	और अगर	उस की कन्नातें	उन्हें	घेर लेंगी		
كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ ۖ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾								
29	आराम गाह	और बुरी है	बुरा है पीना (मशरूब)	सुँह (जमा)	वह भून डालेगा	पिघले हुए ताम्बे की मानिंद		

और हरगिज़ किसी काम को न कहना “कि मैं कल करने वाला हूँ” (कल कर दूँगा), (23)

मगर “यह कि अल्लाह चाहे” (इनशा अल्लाह) और जब तू भूल जाए तो अपने रब को याद कर और कहो उम्मीद है कि मेरा रब मुझे हिदायत दे उस से ज़ियादा करीब की भलाई की। (24)

और वह उस ग़ार में तीन सौ (300) साल रहे, और उन के ऊपर नौ (309) साल। (25)

आप (स) कह दें अल्लाह खूब जानता है वह कितनी मुदत ठहरे, उसी को है आस्मानों और ज़मीन का ग़ैब, क्या (खूब) वह देखता है और क्या (खूब) वह सुनता है! उन के लिए उस के सिवा कोई मददगार नहीं, वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता। (26)

और आप (स) पढ़ें जो आप (स) की तरफ़ आप (स) के रब की किताब वहि की गई है, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं, और तुम हरगिज़ न पाओगे उस के सिवा कोई पनाह गाह। (27)

और अपने आप को उन लोगों के साथ रोके (लगाए) रखो जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम, वह उस की रज़ा चाहते हैं, और तुम्हारी आँखें उन से न फिरे कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी की आराइश के तलबगार हो जाओ, और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपने ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया, और वह अपनी खाहिश के पीछे पड़ गया, और उस का काम हद से बढ़ा हुआ है। (28)

और आप (स) कह दें हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है, पस जो चाहे सो ईमान लाए और जो चाहे सो न माने, हम ने बेशक तैयार की है ज़ालिमों के लिए आग, उस की क़न्नातें उन्हें घेर लेंगी, और अगर वह फ़र्याद करेंगे तो पिघले हुए ताम्बे के मानिंद (खौलते) पानी से दाद रसी किए जाएंगे, वह (उन के) सुँह भून डालेगा, बुरा है उन का मशरूब और बुरी है (उन की) आराम गाह (जहननम)। (29)

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अमल किए नेक, यकीनन हम उस का अजर ज़ाया नहीं करेंगे जिस ने अच्छा अमल किया। (30) यही लोग हैं उन के लिए हमेशगी के बागात हैं, बहती हैं उन के नीचे नहरें, उस में उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे, और वह कपड़े पहनेंगे सब्ज़ बारीक रेशम के और दबीज़ रेशम के, उस में वह मसहरियों पर तकिया लगाए हुए होंगे, अच्छा बदला और खूब है आराम गाह। (31)

और आप (स) उन के लिए दो आदमियों का हाल बयान करें, हम ने उन में से एक के लिए दो (2) बाग बनाए अंगूरों के, और हम ने उन्हें खजूरों के दरख्तों (की बाड़) से घेर लिया, और उन के दरमियान खेती रखी। (32)

दोनों बाग अपने फल लाए, और उस (पैदावार) में कुछ कमी न करते थे, और हम ने उन दोनों के दरमियान में एक नहर जारी कर दी। (33)

और उस के लिए (बहुत) फल था तो वह अपने साथी से बोला, मैं माल में तुझ से ज़ियादा तर हूँ, और आदमियों (जत्थे) के लिहाज़ से ज़ियादा बाइज़ज़त हूँ। (34)

और वह अपने बाग में दाखिल हुआ (इस हाल में कि) वह अपनी जान पर जुल्म कर रहा था, वह बोला मैं गुमान नहीं करता कि यह कभी बरबाद होगा। (35)

और मैं गुमान नहीं करता कि क़ियामत बरपा होने वाली है, और अगर मैं अपने रब की तरफ लौटाया गया तो मैं ज़रूर इस से बेहतर लौटने की जगह पाऊँगा। (36)

उस के साथी ने उस से कहा और वह उस से बातें कर रहा था, क्या तू उस के साथ कुफ़ करता है? जिस ने तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़ से, फिर उस ने तुझे बनाया (पूरा) मर्द। (37)

लेकिन मैं (कहता हूँ) वही अल्लाह मेरा रब है, और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करता। (38)

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نِعَمَ الثَّوَابِ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾ وَاصْرَبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾ كُلَّا الْجَنَّتَيْنِ اتَتْهُمَا أَكْلَاهَا وَلَمْ يَكُن لَّهُمَا شَيْءٌ وَفَجَّرْنَا خِلْفَهُمَا نَهْرًا ﴿٣٣﴾ وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ قَالَ مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هَذِهِ أَبَدًا ﴿٣٥﴾ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِنْ رُودْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾ قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾ لَكِنَّا هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ﴿٣٨﴾							
जो - जिस	अजर	हम ज़ाया नहीं करेंगे	यकीनन हम	नेक	और उन्होंने ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	वेशक
वहती हैं	हमेशगी	बागात	उन के लिए	यही लोग	30	अमल	अच्छा किया
सोना	से	कंगन	से	उस में	पहनाए जाएंगे	नहरें	उन के नीचे
तकिया लगाए हुए	और दबीज़ रेशम	बारीक रेशम	से - के	सब्ज़ रंग	कपड़े	और वह पहनेंगे	
और बयान करें आप (स)	31	आराम गाह	और खूब है	बदला	अच्छा	तख्तों (मसहरियों) पर	उस में
अंगूर (जमा)	से - के	दो बाग	उन में एक के लिए	हम ने बनाए	दो आदमी	मिसाल (हाल)	उन के लिए
दोनों बाग	32	खेती	उन के दरमियान	और बना दी (रखी)	खजूरों के दरख्त	और हम ने उन्हें घेर लिया	
33	एक नहर	दोनों के दरमियान	और हम ने जारी करदी	कुछ	उस से	और कम न करते थे	अपने फल लाए
मैं ज़ियादा तर	उस से बातें करते हुए	और वह	अपने साथी से	तो वह बोला	फल	उस के लिए	और था
और वह	अपना बाग	और वह दाखिल हुआ	34	आदमियों के लिहाज़ से	और ज़ियादा बाइज़ज़त	माल में	तुझ से
35	कभी	यह	बरबाद होगा	कि	मैं गुमान नहीं करता	वह बोला	अपनी जान पर जुल्म कर रहा था
मैं ज़रूर पाऊँगा	अपना रब	तरफ	मैं लौटाया गया	और अगर	काइम (बरपा)	क़ियामत	और मैं गुमान नहीं करता
उस से बातें कर रहा था	और वह	उस का साथी	उस से	कहा	36	लौटने की जगह	इस से बेहतर
फिर	नुत्फ़ से	फिर	मिट्टी से	तुझे पैदा किया	उस के साथ जिस ने	क्या तू कुफ़ करता है	
38	किसी को	अपने रब के साथ	और मैं शरीक नहीं करता	मेरा रब	वह अल्लाह	लेकिन मैं	37 मर्द तुझे पूरा बनाया



وَلَوْ لَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتِكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ									
अल्लाह की	मगर	नहीं कुव्वत	जो चाहे अल्लाह	तू ने कहा	अपना बाग़	तू दाखिल हुआ	जब	और क्यों न	
إِنْ تَرَنِ أَنَا أَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَوَلَدًا ۖ فَعَسَىٰ رَبِّي أَنْ									
कि	मेरा रब	तो करीब	39	और औलाद में	माल में	अपने से	कम तर	मुझे	अगर तू मुझे देखता है
يُؤْتِينَ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلْ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاءِ									
आस्मान	से	आफ़त	उस पर	और भेजे	तेरा बाग़	से	बेहतर	मुझे दे	
فَتُصْبِحُ صَعِيدًا زَلَقًا ۖ أَوْ يُصْبِحُ مَاءً غُورًا فَلَنْ تَسْتَطِيعَ									
फिर तू हरगिज़ न कर सके	खुश्क	उस का पानी	हो जाए	या	40	चटयल	मिट्टी का मैदान	फिर वह हो कर रह जाए	
لَهُ طَلَبًا ۖ (٤١) وَأَحِيطَ بِثَمَرِهِ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ									
पर	अपने हाथ	वह मलने लगा	पस वह रह गया	उस के फल	और घेर लिया गया	41	तलव (तलाश)	उस को	
مَا أَنْفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَلَيْتَنِي									
ऐ काश	और वह कहने लगा	अपनी छतरियां	पर	गिरा हुआ	और वह	उस में	जो उस ने खर्च किया		
لَمْ أَشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ۖ (٤٢) وَلَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَنْصُرُونَهُ									
उस की मदद करती वह	कोई जमाअत	उस के लिए	और न होती	42	किसी को	अपने रब के साथ	मैं शरीक न करता		
مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ۖ (٤٣) هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ									
इख्तियार	यहां	43	बदला लेने के काबिल	वह था	और न	अल्लाह के सिवा	से		
لِلَّهِ الْحَقُّ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ۖ (٤٤) وَاضْرِبْ لَهُم									
उन के लिए	और बयान कर दें	44	बदला देने में	और बेहतर	सवाब देने में	बेहतर	वह	अल्लाह के लिए बरहक	
مَّثَلِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ									
आस्मान	से	हम ने उस को उतारा	जैसे पानी	दुनिया की ज़िन्दगी	मिसाल				
فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ									
उड़ाती है उसको	चूरा चूरा	वह फिर हो गया	ज़मीन की नवातात (सब्ज़ा)	उस से - ज़रीए	पस मिल जुल गया				
الرِّيحُ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۖ (٤٥) الْمَالُ									
माल	45	बड़ी कुदरत रखने वाला	हर शै पर	अल्लाह	और है	हवा (जमा)			
وَالْبُنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَالْبَقِيَّةُ الصَّلَاحُ خَيْرٌ									
बेहतर	नेकियां	और बाकी रहने वाली	दुनिया की ज़िन्दगी	ज़ीनत	और बेटे				
عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ۖ (٤٦) وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ									
पहाड़	हम चलाएंगे	और जिस दिन	46	आजू में	और बेहतर	सवाब में	तेरे रब के नज़्दीक		
وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً ۖ وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۖ (٤٧)									
47	किसी को	उन से	फिर न छोड़ेंगे हम	और हम उन्हें जमा कर लेंगे	खुली हुई (साफ़ मैदान)	ज़मीन	और तू देखेगा		

और क्यों न जब तू दाखिल हुआ अपने बाग़ में, तू ने कहा “माशा अल्लाह” (जो अल्लाह चाहे वही होता है) कोई कुव्वत नहीं मगर अल्लाह की (दी हुई) अगर तू मुझे अपने से कम तर देखता है माल में और औलाद में, (39)

तो करीब है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से बेहतर दे और उस (तेरे बाग़) पर आफ़त भेजे आस्मान से, फिर वह मिट्टी का चटयल मैदान हो कर रह जाए। (40)

या उस का पानी खुश्क हो जाए, और तू हरगिज़ न कर सके उस को तलाश। (41)

और उस के फल (अज़ाब में) घेर लिए गए और उस में जो उस ने खर्च किया था, वह उस पर अपना हाथ मलता रह गया और वह (बाग़) अपनी छतरियों पर गिरा हुआ था और वह कहने लगा ऐ काश, मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न करता। (42)

और उस के लिए कोई जमाअत न हुई कि अल्लाह के सिवा उस की मदद करती, और वह बदला लेने के काबिल न था। (43)

यहां इख्तियार अल्लाह बरहक के लिए है, वही बेहतर है सवाब देने में, और बेहतर है बदला देने में। (44)

और आप (स) उन के लिए बयान करें दुनिया की मिसाल (वह ऐसे है) जैसे हम ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रीए ज़मीन का सब्ज़ा मिल जुल गया (खूब घना उगा) फिर वह चूरा चूरा हो गया कि उस को हवाएं उड़ाती हैं, और अल्लाह हर शै पर बड़ी कुदरत रखने वाला है। (45)

माल और बेटे दुनिया की ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं, और बाकी रहने वाली नेकियां तेरे रब के नज़्दीक बेहतर हैं सवाब में, और बेहतर हैं आज़ू में। (46)

और जिस दिन हम पहाड़ चलाएंगे, और तू ज़मीन को साफ़ मैदान देखेगा, और हम उन्हें जमा कर लेंगे, फिर हम उन में से किसी को न छोड़ेंगे। (47)

और वह तेरे रब के सामने सफ़ वस्ता पेश किए जाएंगे, (आखिर) अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, जबकि तुम समझते थे कि हम तुम्हारे लिए हरगिज़ कोई वक़्त मौजूद न ठहराएंगे। (48)

और रखी जाएगी किताब, जो उस में (लिखा होगा) सो तुम मुज़्रिमों को उस से डरते हुए देखोगे, और वह कहेंगे हाए हमारी शामते आमाल! कैसी है यह तहरीर! यह नहीं छोड़ती छोटी सी बात और न बड़ी बात मगर उसे क़लम बन्द किए हुए है, और वह पा लेंगे जो कुछ उन्होंने ने किया (अपने) सामने, और तुम्हारा रब किसी पर जुल्म नहीं करेगा। (49)

और (याद करो) जब हम ने फ़रिश्तों से कहा तुम सिजदा करो आदम (अ) को तो (उन) सब ने सिजदा किया सिवाए इब्लीस के, वह (कौमे) जिन से था, और वह अपने रब के हुकम से बाहर निकल गया, सो क्या तुम उस को और उस की औलाद को मेरे सिवाए दोस्त बनाते हो? और वह तुम्हारे दुश्मन हैं, बुरा है ज़ालिमों के लिए बदल। (50)

मैं ने उन्हें न आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने (के वक़्त) हाज़िर किया (बुलाया) और न खुद उन के पैदा करते (वक़्त), और मैं गुमराह करने वालों को (दस्त ओ) बाजू बनाने वाला नहीं हूँ। (51)

और जिस दिन वह (अल्लाह) फ़रमाएगा कि बुलाओ मेरे शरीकों को जिन्हें तुम ने (माबूद) गुमान किया था, पस वह उन्हें पुकारेंगे तो वह जवाब न देंगे, और हम उन के दरमियान हलाकत की जगह बना देंगे। (52)

और देखेंगे मुज़्रिम आग, तो वह समझ जाएंगे कि वह उस में गिरने वाले हैं, और वह उस से (बच निकलने की) कोई राह न पाएंगे। (53)

और हम ने अलबत्ता इस कुरआन में लोगों के लिए फेर फेर कर हर किस्म की मिसालें बयान की हैं, और इन्सान हर शै से ज़ियादा झगड़ा लू है। (54)

وَعَرِضُوا عَلَى رَبِّكَ صَفًّا لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ								
हम ने तुम्हें पैदा किया था	जैसे	अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए	सफ़ वस्ता	तेरा रब	पर - सामने	और वह पेश किए जाएंगे		
أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَجْعَلَ لَكُمْ مَوْعِدًا (६४) وَوَضَعَ								
और रखी जाएगी	48	कोई वक़्त मौऊद	तुम्हारे लिए	कि हम ठहराएंगे	हरगिज़ न	तुम समझते थे	बल्कि (जबकि)	पहली बार
الْكِتَابِ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ								
उस में	उस से जो	डरते हुए	मुज़्रिम (जमा)		सो तुम देखोगे		किताब	
وَيَقُولُونَ يُوَيْلَتْنَا مَا هَذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً								
छोटी बात	यह नहीं छोड़ती	यह किताब (तहरीर)		कैसी है	हाए हमारी शामते आमाल	और वह कहेंगे		
وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْضَاهَا وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا								
सामने	जो उन्होंने ने किया		और वह पालेंगे		वह उसे घेरे (क़लम बन्द किए) हुए	मगर	बड़ी बात	और न
وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا (६९) وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَكَةِ اسْجُدُوا								
तुम सिज्दा करो	फ़रिश्तों से		हम ने कहा	और जब	49	किसी पर	तुम्हारा तब	और जुल्म नहीं करेगा
لَادَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ								
से	वह (बाहर) निकल गया	जिन	से	वह था	इब्लीस	सिवाए	तो उन्होंने ने सिज्दा किया	आदम (अ) को
أَمْرِ رَبِّهِ أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي وَهُمْ								
और वह	मेरे सिवाए	दोस्त (जमा)		और उस की औलाद	सो क्या तुम उस को बनाते हो		अपने रब का हुक्म	
لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا (७०) مَا أَشْهَدْتُهُمْ خَلَقَ								
पैदा करना	हाज़िर किया मैं ने उन्हें	नहीं	50	बदल	ज़ालिमों के लिए	बुरा है	दुश्मन	तुम्हारे लिए
السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلَقَ أَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُمْ تُتَّخَذُ								
वनाने वाला	और मैं नहीं		उन की जानें (खुद वह)		और न पैदा करना	और ज़मीन	आस्मानों	
الْمُضِلِّينَ عَصِدًا (७१) وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَائِيَ الَّذِينَ								
और वह जिन्हें	मेरे शरीक (जमा)	बुलाओ	वह फ़रमाएगा	और जिस दिन	51	बाजू	गुमराह करने वाले	
زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ								
उन के दरमियान	और हम बना देंगे	उन्हें	तो वह जवाब न देंगे			पस वह उन्हें पुकारेंगे	तुम ने गुमान किया	
مَوْبِقًا (७२) وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاقِعُوهَا								
गिरने वाले हैं उस में	कि वह	तो वह समझ जाएंगे	आग	मुज़्रिम (जमा)		और देखेंगे	52	हलाकत की जगह
وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا (७३) وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ								
कुरआन	इस	में	हम ने फेर फेर कर बयान किया	और अलबत्ता	53	कोई राह	उस से	और न वह पाएंगे
لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا (७६)								
54	झगड़ा लू	हर शै से ज़ियादा		इन्सान	और है	हर (तरह की) मिसालें	से	लोगों के लिए

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةٌ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝٥٥ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا أُنذِرُوا هُزُوًا ۝٥٦ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدُهُ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ۝٥٧ وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوا لَعَجَلْ لَهُمُ الْعَذَابُ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَّنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْيلًا ۝٥٨ وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَوْعِدًا ۝٥٩ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ۝٦٠ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۝٦١ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ إِنِّي جَدَّاءُنَا لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا ۝٦٢							
और वह बख्शिश मांगें	हिदायत	जब आ गई उन के पास	वह ईमान लाएं	कि	लोग	रोका	और नहीं
आए उन के पास	या	पहलों की	रविश (मामला)	उन के पास आए	यह कि	सिवाए	अपना रब
खुशखबरी देने वाले	मगर	रसूल (जमा)	और हम नहीं भेजते	55	सामने का	अज़ाब	
ताकि वह फुसला दें	नाहक (की बातों से)	कुफ़ किया (काफ़िर)	वह जिन्हों ने	और झगड़ा करते हैं	और डर सुनाने वाले		
और कौन	56	मज़ाक	वह डराए गए	और जो - जिस	मेरी आयत	और उन्होंने ने बनाया	हक़ से
जो आगे भेजा	और वह भूल गया	उस से	तो उस ने मुँह फेर लिया	उस का रब	आयतों से	समझाया गया	उस से जो बड़ा ज़ालिम
और में	वह उसे समझ सकें	कि	पर्दे	उन के दिलों	पर	वेशक हम ने डाल दिए	उस के दोनों हाथ
पाएँ हिदायत	तो वह हरगिज़ न	हिदायत	तरफ़	तुम उन्हें बुलाओ	और अगर	गिरानी	उन के कान
उस पर जो	उन का मुआख़ज़ा करे	अगर	रहमत वाला	बख़शने वाला	और तुम्हारा रब	57	कभी भी जब भी
वह हरगिज़ न पाएंगे	उन के लिए एक वक़्त मुक़र्र	बल्कि	अज़ाब	उन के लिए	तो वह जल्द भेज दे	उन्होंने ने किया	
और हम ने मुक़र्र किया	उन्होंने ने जुल्म किया	जब	हम ने उन्हें हलाक कर दिया	वसूतियाँ	और यह (उन)	58	पनाह की जगह उस से बरे
यहाँ तक कि	मैं न हटूँगा	अपने जवान (शागिर्द) से	मूसा (अ)	कहा	और जब	59	एक मुक़र्र वक़्त उन की तबाही के लिए
मिलने का मुक़ाम	वह दोनों पहुँचे	फिर जब	60	मुद्दे दराज़	या चलता रहूँगा	दो दर्याओं के	मिलने की जगह मैं पहुँच जाऊँ
फिर जब	61	सुरंग की तरह	दर्या में	अपना रास्ता	तो उस ने बना लिया	अपनी मछली	वह दोनों के दरमियान
62	तक्लीफ़	इस	अपना सफ़र	से	अलबत्ता हम ने पाई	हमारा सुबह का खाना	हमारे पास लाओ
						अपने शागिर्द को	उस ने कहा
						वह आगे चले	

और लोगों को (किसी बात ने) नहीं रोका कि वह ईमान ले आएँ जब कि उन के पास हिदायत आ गई और वह अपने रब से बख्शिश मांगें, सिवाए इस के कि उन के पास पहलों की रविश आए या उन के पास आए सामने का अज़ाब। (55) और हम रसूल नहीं भेजते मगर खुशखबरी देने वाले और डर सुनाने वाले, और झगड़ा करते हैं काफ़िर नाहक बातों के साथ, ताकि वह उस से हक़ (बात) को फुसला दें, और उन्होंने ने बनाया मेरी आयतों को और जिस से वह डराए गए एक मज़ाक। (56) और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिसे उस के रब की आयतों से समझाया गया तो उस ने उस से मुँह फेर लिया, और भूल गया जो उस के दोनों हाथों ने (उस ने) आगे भेजा है, वेशक हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वह इस कुरआन को समझ सकें और उन के कानों में गिरानी है (बहरे हैं) और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो जब भी वह हरगिज़ हिदायत न पाएंगे कभी भी। (57) और तुम्हारा रब बख़शने वाला, रहमत वाला है। अगर उन के किए पर वह उन का मुआख़ज़ा करे तो वह जल्द भेज दे उन के लिए अज़ाब, बल्कि उन के लिए एक वक़्त मुक़र्र है और वह हरगिज़ उस के बरे पनाह की जगह न पाएंगे। (58) और उन वसूतियों को जब उन्होंने ने जुल्म किया हम ने हलाक कर दिया, और हम ने उन की तबाही के लिए एक वक़्त मुक़र्र किया। (59) और (याद करो) जब मूसा (अ) ने अपने शागिर्द से कहा मैं हटूँगा नहीं (चलता रहूँगा) यहाँ तक कि पहुँच जाऊँ दो (2) दर्याओं के मिलने की जगह (संगम पर) या मैं मुद्दे दराज़ चलता रहूँगा। (60) फिर जब वह दोनों (दर्याओं) के संगम पर पहुँचे तो वह अपनी मछली भूल गए तो उस (मछली) ने अपना रास्ता बना लिया दर्या में सुरंग की तरह। (61) फिर जब वह आगे चले तो मूसा (अ) ने अपने शागिर्द को कहा हमारे लिए सुबह का खाना लाओ, अलबत्ता हम ने अपने इस सफ़र से बहुत (तक्लीफ़) थकान पाई है। (62)

उस ने कहा क्या आप ने देखा? जब हम पत्थर के पास ठहरे तो वेशक मैं मछली भूल गया और मुझे नहीं भुलाया मगर शैतान ने, कि मैं (आप से) उस का ज़िक्र करूँ, और उस ने बना लिया अपना रास्ता दर्या में अजीब तरह से। (63)

मूसा (अ) ने कहा यही है (वह मुक़ाम) जो हम चाहते थे, फिर वह दोनों लौटे अपने निशानाते क़दम पर देखते हुए। (64)

फिर उन्होंने ने हमारे बन्दों में से एक बन्दा (ख़िज़्र अ) को पाया, उसे हम ने अपने पास से रहमत दी, और हम ने उसे अपने पास से इल्म दिया। (65)

मूसा (अ) ने उस से कहा क्या मैं तुम्हारे साथ चलूँ? इस (बात) पर कि तुम मुझे सिखा दो इस भली राह में से जो तुम्हें सिखाई गई है। (66)

उस (ख़िज़्र अ) ने कहा वेशक तू मेरे साथ हरगिज़ सव्‌र न कर सकेगा। (67)

और तू उस पर कैसे सव्‌र कर सकेगा जिस का तू ने वाक़िफ़ियत से अहाता नहीं किया (जिस से तू वाक़िफ़ नहीं)। (68)

मूसा (अ) ने कहा अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम जल्द मुझे पाओगे सव्‌र करने वाला, और मैं तुम्हारी किसी बात की नाफ़रमानी न करूँगा। (69)

ख़िज़्र (अ) ने कहा पस अगर तुझे मेरे साथ चलना है तो मुझ से न पूछना किसी चीज़ से मुतअल्लिक्, यहां तक कि मैं खुद तुझ से ज़िक्र करूँ। (70)

फिर वह दोनों चले यहां तक कि जब वह दोनों कशती में सवार हुए, उस (ख़िज़्र अ) ने उस में सुराख़ कर दिया, मूसा (अ) ने कहा तुम ने उस में सुराख़ कर दिया ताकि तुम उस के सवारों को गर्क कर दो, अलबत्ता तुम ने एक भारी (ख़तरे की) बात की है। (71)

ख़िज़्र (अ) ने कहा क्या मैं ने नहीं कहा था? कि तू मेरे साथ हरगिज़ सव्‌र न कर सकेगा। (72)

मूसा (अ) ने कहा आप उस पर मेरा मुआख़ज़ा न करें जो मैं भूल गया और मेरे मामले में मुझ पर मुश्क़िल न डालें। (73)

फिर वह दोनों चले यहां तक कि वह एक लड़के को मिले तो उस (ख़िज़्र अ) ने उसे क़त्ल कर दिया। मूसा (अ) ने कहा क्या तुम ने एक पाक जान को जान (के बदले के) वग़ैर क़त्ल कर दिया, अलबत्ता तुम ने एक नापसन्दीदा काम किया। (74)

قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْخُوتَ								
मछली	भूल गया	तो वेशक मैं	पत्थर	तरफ-पास	हम ठहरे	जब	क्या आप ने देखा?	उस ने कहा
وَمَا أَنْسَيْنِيهِ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ								
दर्या में	अपना रास्ता	और उस ने बना लिया	मैं उस का ज़िक्र करूँ	कि	शैतान	मगर	भुलाया मुझे	और नहीं
عَجَبًا ٦٣ قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلَىٰ آثَارِهِمَا								
अपने निशानाते (क़दम)	पर	फिर वह दोनों लौटे	हम चाहते थे	जो	यह	उस ने कहा	63	अजीब तरह
فَصَصَا ٦٤ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَا اتَيْنَهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا								
अपने पास	से	रहमत	हम ने दी उसे	हमारे बन्दे	से	एक बन्दा	फिर दोनों ने पाया	64
وَعَلَّمْنَاهُ مِمَّا لَدُنَّا عِلْمًا ٦٥ قَالَ لَهُ مُوسَىٰ هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَىٰ								
पर	मैं तुम्हारे साथ चलूँ	क्या	मूसा (अ)	उस को	कहा	65	इल्म	अपने पास से
أَنْ تُعَلِّمَنِي مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ٦٦ قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ								
हरगिज़ न कर सकेगा तू	वेशक तू	उस ने कहा	66	भली राह	तुम्हें सिखाया गया है	उस से जो	तुम सिखा दो मुझे	कि
مَعِيَ صَبْرًا ٦٧ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ٦٨								
68	वाक़िफ़ियत से	तू ने अहाता नहीं किया उसका	जो	उस पर	तू सव्‌र करेगा	और कैसे	67	सव्‌र मेरे साथ
قَالَ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ٦٩								
69	किसी बात	तुम्हारे	मैं नाफ़रमानी करूँगा	और न	सव्‌र करने वाला	अगर चाहा अल्लाह ने	तुम मुझे पाओगे जल्द	उस ने कहा
قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ أُحْدِثَ								
मैं बयान करूँ	यहां तक कि	किसी चीज़	से - के बारे में	तो मुझ से न पूछना	तुझे मेरे साथ चलना है	पस अगर	उस ने कहा	
لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ٧٠ فَانْطَلَقَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ۖ								
उस ने सुराख़ कर दिया उस में	कशती में	वह दोनों सवार हुए	जब	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले	70	ज़िक्र	उस का
قَالَ أَخَرَقْتُهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ٧١								
71	भारी	एक बात	अलबत्ता तू लाया (तू ने की)	उस के सवार	कि तुम गर्क कर दो	तुम ने उस में सुराख़ कर दिया	उस ने कहा	
قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ٧٢ قَالَ								
उस ने कहा	72	सव्‌र	मेरे साथ	हरगिज़ न कर सकेगा तू	वेशक तू	क्या मैं ने नहीं कहा	(ख़िज़्र अ) ने कहा	
لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ٧٣								
73	मुश्क़िल	मेरा मामला	से	और मुझ पर न डालें	मैं भूल गया	उस पर जो	आप मेरा मुआख़ज़ा न करें	
فَانْطَلَقَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا غُلَامًا فَقَتَلَهُ ۖ قَالَ أَقْتَلْت								
क्या तुम ने क़त्ल कर दिया	उस ने कहा	तो उस ने उस को क़त्ल कर दिया	एक लड़का	वह मिले	जब	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले	
نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا ٧٤								
74	नापसन्दीदा	एक काम	तुम आए (तुम ने किया)	अलबत्ता	जान	वग़ैर	पाक	एक जान